प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय 2

पिता परमेश्वर

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय..1
परमेश्वर...2
एकात्मकता..2
बहुईश्वरवाद...3
एकेश्वरवाद..4
मसीहियत..6
सादगी..8
सर्वसामर्थी परमेश्वर...10
नाम...10
व्यक्ति...12
पितृत्व...14
सृष्टिकर्ता...14
राजा...15
मुखिया...17
सामर्थ...19
असीम..19
अतुल्य...21
कर्ता...23
सृष्टि का कार्य..23
सृष्टि की अच्छाई...25
सृष्टि पर अधिकार..27
अन्तिम...27
एकमात्र...28
पूर्ण..29
उपसंहार...30

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय दो

पिता परमेश्वर

परिचय

बहुत से धर्म एक अस्तित्व की पूजा करते हैं जिसे वे “परमेश्वर” कहते हैं। और यह एक रुचिकर प्रश्न का खड़ा करता है: क्या वे सब एक ही अस्तित्व की आराधना करते हैं, केवल विभिन्न नामों के द्वारा? या क्या वे बिल्कुल अलग देवताओं की आराधना करते हैं? बाइबल बताती है कि यद्यपि बहुत से अलग-अलग धर्म - “परमेश्वर” - शब्द का ही प्रयोग करते हैं परन्तु उनका अर्थ बहुत अलग होता है। पवित्र वचन बल देता है कि केवल एक सच्चा परमेश्वर है - जिसकी मसीही आराधना करते हैं। और इसका अर्थ है कि अन्य धर्मों के देवता धोखेबाज हैं, मूरतें हैं, झूठे ईश्वर हैं। इसी कारण मसीहियत ने हमेशा बाइबल के परमेश्वर को जानने पर अत्यधिक बल दिया है। वही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, एकमात्र जिसमें रचने, नाश करने, और बचाने की सामर्थ है।

यह प्रेरितों के विश्वास-कथन की हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है, और इसका शीर्षक दिया है “पिता परमेश्वर।” इस अध्याय में, हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में विश्वास के प्रथम सूत्र पर ध्यान देंगे - जो त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति, पिता परमेश्वर में विश्वास की पुष्टि करता है।

जैसा हमने पिछले अध्याय में देखा, प्रेरितों का विश्वास-कथन कलीसिया की आरम्भिक सदियों में विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। परन्तु इसे लगभग 700 ईस्वी में लैटिन भाषा में अन्तिम रूप दिया गया। इसका प्रचलित आधुनिक अनुवाद इस प्रकार है:

> मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,
> जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।
> मैं उसके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ।
> जो पवित्र आत्मा से कुंवारी मरियम के द्वारा पैदा हुआ।
> उसने पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा, क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया
> और गाड़ा गया;
> वह अधोलोक में उतरा।
> तीसरे दिन वह मृतकों में से फिर जी उठा।
> वह स्वर्ग में चढ़ गया।
> और वह सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।
> जहां से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।
> मैं पवित्र आत्मा में,
> पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया,
> पवित्र संतों की संगति,
> पापों की क्षमा में,
> देह के पुनरुत्थान में
> और अनन्त जीवन में विश्वास करता हूँ। आमीन।

आपको याद होगा कि इन अध्यायों में हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन को पाँच मुख्य भागों में बाँटा है: पहले तीन भाग परमेश्वर के तीन व्यक्तित्वों के बारे में हैं: पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा। इसके बाद एक भाग कलीसिया पर है, और फिर एक भाग उद्धार पर है। इस अध्याय में, हम पाँच में से पहले भाग पर ध्यान केन्द्रित करेंगे, जो विश्वास के केवल एक सूत्र से निर्मित है:

> मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,
> जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

इस विश्वास के सूत्र में वर्णित बिन्दुओं को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। परन्तु इस अध्याय में हम तीन विषयों पर ध्यान देंगे जो मसीही धर्मविज्ञान में मुख्य रहे हैं: परमेश्वर का विचार, सर्वशक्तिमान पिता का व्यक्तित्व, और सारी सृष्टि के रचयिता के रूप में उसकी भूमिका।

इन विषयों के अनुसार, पिता परमेश्वर पर हमारा अध्याय तीन भागों में विभाजित होगा। पहले हम बाइबल द्वारा परमेश्वर के अस्तित्व और स्वभाव के बारे में सिखाई गई कुछ सामान्य बातों को देखते हुए, परमेश्वर के बारे में मूलभूत विचार की बात करेंगे। दूसरा, त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति के कुछ विशेष गुणों पर ध्यान देते हुए, "सर्वशक्तिमान पिता" शब्द पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। और तीसरा, हम सारी सृष्टि के रचयिता, या सृष्टिकर्ता के रूप में पिता की भूमिका को देखेंगे। आइए हम परमेश्वर के विचार को देखें जिसे बाइबल हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

परमेश्वर

परमेश्वर पर हमारा विश्वास बाकी सबके बारे में हमारे विश्वास का मूल है। और इसलिए यदि इस दृष्टिकोण के अनुसार सोचें, परमेश्वर केन्द्र में है, और शेष सब कुछ उसके साथ अपने संबंध के कारण ही अपने रूप में विद्यमान है। और यह परमेश्वर-केन्द्रित सोच को हमारी संस्कृति की सामान्य सोच से बिल्कुल अलग स्तर पर ला खड़ा करती है, जो स्व-केन्द्रित है, मैं-केन्द्रित है, और इस तरह है कि शेष सब कुछ, परमेश्वर सहित, किस प्रकार मुझ से संबंधित है। और वह बाइबल के दृष्टिकोण के विपरीत है, और मैं सोचता हूँ, मैं कहने की हिम्मत कर रहा हूँ, यह परमेश्वर के दृष्टिकोण से भी बिल्कुल अलग है जिसे पवित्र वचन प्रकट करता है। अतः, आज सेवकाई में, मैं-केन्द्रियता को चुनौती देना बहुत महत्वपूर्ण है, जो हमारे लिए बहुत स्वाभाविक है, और मैं-केन्द्रित दृष्टिकोण की जगह परमेश्वर-केन्द्रियता और परमेश्वर-केन्द्रित दृष्टिकोण को रखने का प्रयास करना जरूरी है। (डॉ. जे. आई. पैकर)

हम दो विषयों के आधार पर पवित्र वचन में प्रस्तुत परमेश्वर के मूल विचार को देखेंगे। एक तरफ, हम इस बात को देखेंगे जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर "परमेश्वर की एकात्मकता" कहते हैं, यह तथ्य कि केवल वही एकमात्र परमेश्वर है जो विद्यमान है। और दूसरी तरफ, हम परमेश्वर की सरलता पर ध्यान देंगे, इसे देखते हुए कि वह वास्तव में एक परमेश्वर है, इस तथ्य के बावजूद कि उसके तीन व्यक्तित्व हैं। आइए हम परमेश्वर की एकात्मकता से शुरू करें, यह धर्मशिक्षा, कि बाइबल का परमेश्वर ही एकमात्र और सच्चा परमेश्वर है।

एकात्मकता

जब हम परमेश्वर की एकात्मकता का अनुसंधान करते हैं, तो पहले हम बहुईश्वरवाद को देखेंगे जो कलीसिया की प्रारम्भिक सदियों के दौरान संसार में फैला हुआ था। दूसरा, हम एक ईश्वर की पुष्टि के रूप में एकेश्वरवाद को देखेंगे। और तीसरा, हम मसीहियत और परमेश्वर के बारे में इसकी धारणा पर बात करेंगे। आइए पहले हम बहुदेववाद के शीर्षक पर चलें।

बहुईश्वरवाद

बहुईश्वरवाद कई देवताओं - सामर्थी, अलौकिक व्यक्तित्वों के अस्तित्व पर विश्वास है जो ब्रह्माण्ड को नियन्त्रित करते हैं। ऐसे कुछ देवताओं को अनन्त, स्वयंभू अस्तित्व माना जाता है, जबकि दूसरों के बारे में माना जाता है कि उन्होंने जन्म लिया है या वे रचे गए हैं। बहुईश्वरवादी प्रणालियों में देवता अक्सर एक दूसरे से अलग होते हैं, और इस कारण एक तरह से अद्वितीय होते हैं, जैस सारे मनुष्य अपने आप में अद्वितीय हैं। परन्तु बहुईश्वरवाद में, कोई भी एक देवता यह दावा नहीं कर सकता है कि वही एकमात्र अलौकिक अस्तित्व है जो ब्रह्माण्ड को अपने वश में रखता है।

बहुईश्वरवाद का एक प्रचलित रूप, जो हिनोथिज़्म कहलाता है, दूसरे देवताओं के अस्तित्व का इनकार किए बिना मुख्य रूप से एक देवता के प्रति समर्पण को अभिव्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, रोमी साम्राज्य में कुछ लोग ज्यूस को सर्वोच्च देवता मानने के बावजूद दूसरे देवताओं के अस्तित्व को अंगीकार करते थे।

आरम्भिक कलीसिया के संसार में, अधिकांश गैर-मसीही बहुईश्वरवादी थे। बहुत से लोग यूनानियों और रोमियों के झूठे देवताओं को मानते थे, जबकि दूसरे लोग प्राचीन पूरब की मूरतों की पूजा करते थे। ऐसे बहुईश्वरवादी भी थे जो धरती की ताक़तों को मानते थे, और कुछ लोग पदार्थों या सृष्टि के अन्य पहलूओं की पूजा करते थे। नास्तिकता - यह विश्वास कि कोई ईश्वर नहीं है - बहुत विरल थी।

विभिन्न देवताओं में विश्वास के जनसाधारण में फैले होने का एक कारण यह था कि बहुईश्वरवाद कानून की माँग थी। उदाहरण के लिए, रोमी साम्राज्य में, सरकार रोमी देवताओं की पूजा को लागू करती थी। रोमी इस आराधना की मांग अपने देवताओं को खुश करने और साम्राज्य की सुरक्षा के लिए करते थे। परन्तु विभिन्न देवताओं में विश्वास का मूलभूत कारण मनुष्यों का पापी होना था।

> बाइबल संकेत करती है कि मनुष्यों में सच्चे परमेश्वर से झूठे देवताओं की ओर फिरने की प्रवृत्ति है। यह विशेष रूप से बाइबल की पाप की धर्मशिक्षा से संबंधित है। यह इस तथ्य से ज्यादा संबंधित नहीं है कि हम एक महान सृष्टिकर्ता की सृष्टि हैं बल्कि इससे कि परमेश्वर के सम्मुख हम पापी हैं। पाप इस तरह से कार्य करता है कि वह परमेश्वर द्वारा सृष्टि में प्रकट परमेश्वर के सत्य के संबंध में हमारी आँख को अन्धा कर देता है। और इस कारण, अपने हाल पर छोड़ दिए जाने पर हम वास्तव में परमेश्वर या दिव्य गुणों के रूप में उनकी पहचान करते हैं जिनका परमेश्वर से कोई संबंध ही नहीं है। अन्य शब्दों में, हम सच्चे परमेश्वर के स्थानापन्न के रूप में स्वयं की कल्पना से देवताओं का निर्मित करे लेंगे।
>
> डॉ. डेविड बोर

जैसे पवित्र वचन सिखाता है, अपने दिल की गहराई में सब लोग जानते हैं कि ब्रह्माण्ड एक दिव्य सृष्टिकर्ता के हाथ के बिना उत्पन्न नहीं हो सकता है। परन्तु अपने पाप में, मनुष्य स्वाभाविक रूप से सच्चे परमेश्वर को अंगीकार नहीं करते हैं और इन बातों के लिए उसे श्रेय नहीं देते हैं। इसकी बजाय, उसके कार्य का श्रेय हम दूसरे स्रोतों को देते हैं। सुनें पौलुस रोमियों अध्याय 1 पद 20 से 23 में इसके बारे में क्या कहता है:

> क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका

> निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया...(उन्होंने) अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। (रोमियों 1:20-23)

पौलुस के अनुसार, पवित्र वचन के परमेश्वर का अस्तित्व हर व्यक्ति पर स्पष्ट है - यह प्रकट है और पूरी तरह साफ है। पौलुस यहां तक कहता है कि मनुष्य परमेश्वर को प्रकृति में उसके स्व-प्रकाशन के द्वारा जानते हैं। परन्तु हम इतने पापी हैं कि हमने उसकी महिमा करने या उसे धन्यवाद कहने से इनकार कर दिया। इसके विपरीत, हमने उसकी महिमा को अपने द्वारा बनाए गए झूठे ईश्वरों से बदल दिया और उसके स्थान पर उनकी आराधना करने लगे।

> बाइबल हमें बताती है कि सारे पुरुष और स्त्री और बच्चे अपने दिल की गहराई में, अपने मन में, और अपने विवेक में परमेश्वर को जानते हैं। परन्तु रोमियों अध्याय 1 हमें बताता है कि जब से आदम और हव्वा ने पाप किया, अपने दिल की गहराइयों में हम सच्चे परमेश्वर की आराधना से मूरतों और परमेश्वर द्वारा रची किसी भी वस्तु की आराधना की ओर फिर गए। और इसलिए मानवीय मन व्यवहारिक रूप में एक कारखाना है, एक स्रोत, हर प्रकार की मूरतों की जड़। (डॉ. सैमुएल लिंग)

बहुईश्वरवाद की इस तस्वीर को ध्यान में रखते हुए, हम एकेश्वरवाद, इस विश्वास को देखने के लिए तैयार हैं कि केवल एक ही ईश्वर का अस्तित्व है।

एकेश्वरवाद

तकनीकी रूप में, एकेश्वरवाद किसी भी धर्म के बारे में इंगित कर सकता है जो एक ईश्वर में विश्वास की पुष्टि करता है। उदाहरण के लिए, आधुनिक संसार में, यहूदी, मसीही और इस्लाम सभी एकेश्वरवादी धर्म हैं क्योंकि ये सब बल देते हैं कि केवल एक और एकमात्र दिव्य अस्तित्व है।

बाइबल में बहुत से पद्यांश साफ रूप से यह कहने के द्वारा, कि परमेश्वर केवल एक है, परमेश्वर की एकात्मकता पर जोर देते हैं। कुछ उदाहरणों को देखें। 1 राजा अध्याय 8, पद 60 में सुलैमान ने कहा:

> ...यहोवा ही परमेश्वर है, और कोई दूसरा नहीं। (1 राजा 8:60)

भजन 86 पद 10 में, दाऊद ने यहोवा के लिए गाया:

> केवल तू ही परमेश्वर है। (भजन 86:10)

2 राजा अध्याय 19 पद 19, हिजकियाह ने प्रार्थना की:

> केवल तू ही यहोवा है। (2 राजा 19:19)

रोमियों अध्याय 3 पद 30 में, पौलुस बल देता है:

> एक ही परमेश्वर है। (रोमियों 3:30)

और याकूब अध्याय 2 पद 19 में, याकूब कहता है:

> तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है: तू अच्छा करता है! (याकूब 2:19)

एक ही दिव्य अस्तित्व है। यह पुराने नियम के दिनों में सत्य था। यह नये नियम के दिनों में सत्य था। यह कलीसिया की आरम्भिक सदियों में सत्य था। और यह आज भी सत्य है।

अब, हमें यह बताने की आवश्यकता है कि सारे एकेश्वरवादी धर्म एक ही ईश्वर की आराधना नहीं करते हैं। जैसा हमने कहा, यहूदी, मसीहियत और इस्लाम में एक ईश्वर की आराधना की जाती है। और इससे बढ़कर, ये सब कम से कम नाम में, इस परमेश्वर की पहचान इब्राहीम के परमेश्वर के रूप में करते हैं। परन्तु जिन धारणाओं को वे "इब्राहीम का परमेश्वर" के नाम से जोड़ते हैं वे बिल्कुल अलग हैं। उनमें उसके चरित्र, उसके दिव्य कार्यों, और यहां तक कि उसके स्वभाव के बारे में असहमति है।

यहूदी धर्म को देखें। यहूदी धर्म के विश्वास का आधार पुराना नियम है, मसीही भी यही करते हैं। परन्तु वे त्रिएक परमेश्वर का इनकार करते हैं जिसे बाइबल प्रकट करती है। वास्तव में, वे त्रिएकत्व के प्रत्येक व्यक्ति का इनकार करते हैं। वे यीशु को प्रभु और देहधारी परमेश्वर नहीं मानते हैं। वे इस बात से इनकार करते हैं कि पवित्र आत्मा एक दिव्य व्यक्ति है। और यीशु तथा पवित्र आत्मा का इनकार करने के द्वारा वे पिता का इनकार करते हैं जिसने उन्हें भेजा। जैसे स्वयं यीशु ने लूका अध्याय 10 पद 16 में कहा:

> जो मुझे तुच्छ जानता है वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है। (लूका 10:16)

यहूदी धर्म यीशु और पवित्र आत्मा का इनकार करता है, इस कारण पिता का भी इनकार करता है।

यहूदी धर्म का विश्वास है कि वह परमेश्वर की आराधना इस प्रकार से करता है जिस प्रकार वह पुराने नियम में प्रकट है। यह उसी पुराने नियम की ओर इशारा है जिस से मसीही प्रेम करते हैं और कहते हैं, "हम उस परमेश्वर की आराधना करते हैं।" अतः, बाह्य तौर पर, एक अर्थ है जिस में हम कह सकते हैं कि हम एक ही परमेश्वर की आराधना करते हैं। परन्तु दूसरे अर्थ में उनका ईश्वर हमारे से अलग है क्योंकि उन्होंने यीशु में परमेश्वर के पूर्ण प्रकाशन को स्वीकार नहीं किया है।

और जब हम इस्लाम को देखते हैं, यह और अधिक स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर के बारे में उनका विचार बाइबल के विरूद्ध है।

> एक महत्वपूर्ण सवाल है: एक परमेश्वर के विचार के बारे में इस्लामी विश्वास क्या दावा करता है? मेरा विश्वास है कि इस्लाम परमेश्वर में एक प्रकार की एकता की पुष्टि करता है, परन्तु इस्लाम की बजाय मसीहियत यहोवा के साथ विभिन्न विशेषताओं और गुणों को जोड़ती है। हमारे पास छुटकारे और देहधारण की धर्मशिक्षाएँ हैं, और वे महत्वपूर्ण धर्मशिक्षाएँ हैं जो हमारे प्रभु के चरित्र को लोगों के जीवन में एक स्पष्ट और मूलभूत तरीके से बताती हैं। छुटकारा और देहधारण दोनों परमेश्वर की एकता के संबंध में मुसलमानों की समझ से गायब हैं।
>
> डॉ. रायड केसिस, अनुवाद

> परमेश्वर के बारे में इस्लामी विचार वास्तव में बाइबल के विरूद्ध है, और इसमें सबसे महत्वपूर्ण इस्लाम का यह दावा है कि उसके समान और कोई नहीं है। इस्लाम में, यदि मैं उस तकनीकी शब्द को समझा सकूँ, कि परमेश्वर बिल्कुल एक है और उसके अन्दर अस्तित्व का कोई समुदाय नहीं है। मसीही धर्मविज्ञान में एकेश्वरवाद यानी इस विश्वास के प्रति पूरी वफादारी है कि परमेश्वर केवल एक है। बाइबल का शुरुआती विश्वास-कथन है, "हे इस्राएल सुन, तेरा परमेश्वर यहोवा, केवल वही परमेश्वर है।" इसलिए एकेश्वरवाद पर अत्यधिक बल शुरूआत से ही

> यहूदी-मसीही धर्मविज्ञानी परम्परा का हिस्सा रहा है। और इसलिए मसीही एकेश्वरवादी हैं। लेकिन हमारे बहुत से इस्लामी मित्र इसे नहीं मानते हैं। वे सोचेंगे कि हम तीन ईश्वरों को मानते हैं। और वे वास्तव में सोचते हैं कि आप पिता में, और माता में, और पुत्र में विश्वास करते हैं, क्योंकि मुहम्मद की परमेश्वर के बारे में मसीही धर्मशिक्षा की समझ गलत थी। परन्तु त्रिएकत्व की मसीही धर्मशिक्षा - कि एक परमेश्वर अनन्त रूप से तीन व्यक्तियों, पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा में विद्यमान है, जो केवल एक परमेश्वर की अभिव्यक्ति की विभिन्न शैलियाँ नहीं हैं और न ही वे एक परमेश्वर के लिए प्रयुक्त तीन अलग-अलग रूपक हैं, परन्तु उस एक सच्चे परमेश्वर में व्यक्तियों के बीच वास्तविक और तात्विक संगति है - यह इस्लाम की परमेश्वर की धारणा से बिल्कुल भिन्न है।
>
> डॉ. जे. लिगोन डन्कन तृतीय

अत: यहूदी धर्म, मसीहियत और इस्लाम सभी एकेश्वरवादी धर्म हैं। ये सब बहुईश्वरवाद से भिन्न हैं क्योंकि वे कई देवताओं के अस्तित्व का इनकार करते हैं। परन्तु परमेश्वर के बारे में अपनी अलग-अलग धर्मशिक्षाओं के कारण वे एक दूसरे से भी बिल्कुल भिन्न हैं।

बहुईश्वरवाद और एकेश्वरवाद को देखने के बाद, हम मसीहियत द्वारा प्रमाणित और प्रेरितों के विश्वास-कथन में सिखाए गए परमेश्वर के विचार का वर्णन करने के लिए तैयार हैं।

मसीहियत

प्रेरितों के विश्वास-वचन में परमेश्वर के बारे में दिया गया कथन बिल्कुल स्पष्ट है। यह कहता है:

> मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,
> जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

आप देखेंगे कि विश्वास-वचन स्पष्ट रूप से यह नहीं कहता है कि परमेश्वर एक ही है। यदि हम विश्वास-वचन की उत्पत्ति को नहीं जानते, तो इन शब्दों को यहूदियों के ईश्वर या इस्लाम के ईश्वर में विश्वास की घोषणा के रूप में भी पढ़ा जा सकता था। या बहुत से ईश्वरों के बीच में एक की पुष्टि के रूप में भी। तो हम कैसे जानते हैं कि यह गैर-मसीही एकेश्वरवाद या बहुईश्वरवाद के विपरीत मसीहियत के त्रिएक परमेश्वर के बारे में बात कर रहा है?

एक तरफ, परमेश्वर के बारे में साफ रूप से कही गई अन्य बातों के द्वारा विश्वास-वचन गैर-मसीही एकेश्वरवाद का इनकार करता है। जैसा हमने पिछले अध्याय में देखा, विश्वास-वचन एक त्रिएक सूत्र के आधार पर निर्मित है। यह इस विश्वास को प्रतिबिम्बित करता है कि पिता परमेश्वर, उसका एकलौता पुत्र यीशु मसीह और पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व के तीन अलग-अलग व्यक्ति हैं, दिव्य तत्व में सब एक समान हैं।

फिर, याद करें कि विश्वास-वचन विश्वासों के सारांश के रूप में लिखा गया था, न कि विश्वास के पूर्ण कथन के रूप में। और जब इसे कलीसियाई आराधना विधि में प्रयोग किया गया तो कलीसिया में हर व्यक्ति जानता था कि परमेश्वर के इन तीन व्यक्तियों का इस प्रकार वर्णन करने का निहितार्थ है त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा का प्रतिपादन।

दूसरी तरफ, विश्वास-वचन सामान्य शब्द “ईश्वर” के एकवचन रूप का दिव्य नाम के रूप में प्रयोग करने के द्वारा बहुईश्वरवाद का इनकार करता है।

"ईश्वर" शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं। कई धर्म अपने देवताओं को "ईश्वर" कहते हैं। और बाइबल भी दुष्टात्माओं, मूरतों, और संभवत: मानवीय अगुवों के लिए भी "ईश्वर" शब्द का प्रयोग करती है। लेकिन इन सारे "ईश्वरों" के अपने नाम भी हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन रोम के धर्म में, मंगल युद्ध का ईश्वर था, वरुण समुद्र का देवता था, और बृहस्पति ईश्वरों का नेता था।

इसी तरह, पवित्र वचन का परमेश्वर वास्तविक नामों से जाना जाता है। उनमें से अधिकांश विवरणात्मक हैं, जैसे एल शदाई, जिसका अनुवाद है "सर्वसामर्थी परमेश्वर," अर्थ है परमेश्वर जो सबसे ताकतवर है; और एल एल्योन, जिसका अनुवाद है "सर्वोच्च परमेश्वर," यानी परमेश्वर जो सबके ऊपर राज करता है; और अदोनाई, जिसका अनुवाद है "प्रभु," और अर्थ है स्वामी या शासक।

परन्तु परमेश्वर का सबसे नजदीकी नाम जिसे हम परमेश्वर के उचित नाम के रूप में सोच सकते हैं वह है यहोवा। पुराने अनुवादों में यह जेहोवा के रूप में आता है। परन्तु नये अनुवादों में इसे "प्रभु," कहा जाता है यद्यपि इसका अर्थ अदोनाई से अलग है।

मानवीय इतिहास की शुरूआत में परमेश्वर ने अपने आपको यहोवा के नाम से प्रकट किया। उदाहरण के लिए, मनुष्य परमेश्वर के लिए इस नाम का प्रयोग आदम के पुत्र शेत के समय से करते आ रहे हैं, जैसा हम उत्पत्ति अध्याय 4 पद 26 में देखते हैं। नूह ने परमेश्वर को उत्पत्ति अध्याय 9 पद 26 में यहोवा कहकर संबोधित किया। और इब्राहीम ने उत्पत्ति अध्याय 12 पद 8 में परमेश्वर को इस नाम से पुकारा।

यहोवा वह नाम है जिसे परमेश्वर ने निर्गमन अध्याय 3 पद 13 में मूसा को बताया, जहाँ हम इस अभिलेख को पढ़ते हैं:

> मूसा ने परमेश्वर से कहा, "जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे यह कहूं, कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझ से पूछें, कि उसका नाम क्या है? तब मैं उनको क्या बताऊँ?" परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ। फिर उस ने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना, कि जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।" **(निर्गमन 3:13-14)**

यहोवा नाम इब्रानी शब्द "एहयेह" से संबंधित है, जिसका अनुवाद यहाँ "मैं" किया गया है। यह सबसे घनिष्ठ नाम है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों पर प्रकट किया है, और यह नाम, और किसी नाम से अधिक, उसे झूठे ईश्वरों से अलग ठहराता है।

वास्तव में, बाइबल में बताए गए यहोवा के सारे नामों में, "परमेश्वर" सबसे सामान्य है। हमारे आधुनिक पुराने नियमों में परमेश्वर शब्द आमतौर पर इब्रानी शब्द एल या एलोहीम का अनुवाद होता है। और नये नियम में, यह आमतौर पर यूनानी शब्द थियोस का अनुवाद करता है। परन्तु बाइबल के समयों में, अन्य धर्म अपने देवताओं के लिए इन्हीं नामों का प्रयोग करते थे। तो प्रेरितों के विश्वास-वचन ने यहोवा जैसे विशिष्ट नाम की बजाय परमेश्वर के लिए सामान्य नाम को क्यों चुना? क्योंकि परमेश्वर की पहचान कराने के लिए साधारण शब्द "परमेश्वर" के प्रयोग द्वारा प्रेरितों का विश्वास-वचन इंगित करता है कि केवल मसीहियत का परमेश्वर ही "परमेश्वर" कहलाने के योग्य है। जैसे हम 1 राजा अध्याय 8 पद 60 में पढ़ते हैं:

> यहोवा ही परमेश्वर है और कोई दूसरा नहीं। **(1 राजा 8:60)**

हाँ, दूसरे धर्म विश्वास करते हैं कि वे वास्तविक देवताओं की आराधना करते हैं। परन्तु वास्तविकता में, वे काल्पनिक अस्तित्वों या दुष्टात्माओं की आराधना करते हैं - निम्नस्तरीय, सृष्टि की गई आत्माएँ है जिन पर मसीही परमेश्वर राज करता है। पौलुस ने इसे 1 कुरिन्थियों अध्याय 10 पद 20 में स्पष्ट किया, जहाँ उसने इन शब्दों को लिखा:

> अन्यजाति जो बलिदान करते हैं वे परमेश्वर के लिए नहीं वरन् दुष्टात्माओं के लिए बलिदान करते हैं। (1 कुरिन्थियों 10:20)

अन्यजाति नहीं मानते थे कि वे दुष्टात्माओं को बलिदान चढ़ाते थे; बल्कि उनका मानना था कि वे विभिन्न देवताओं को बलिदान चढ़ाते थे। परन्तु वे गलत थे।

आज संसार में मसीहियत के अतिरिक्त बहुत से धर्म हैं। हिन्दू धर्म, शिन्टो, विक्का, इस्लाम, यहूदी धर्म, कबीलाई धर्म इत्यादि हैं। परन्तु उनके ईश्वर झूठे हैं। कुछ दुष्टात्माओं की पूजा करते हैं। कुछ सृष्टि की आराधना करते हैं। और कुछ काल्पनिक वस्तुओं की आराधना करते हैं। परन्तु बाइबल जोर देती है कि केवल मसीही परमेश्वर ही वास्तव में दिव्य है; केवल मसीही परमेश्वर ही संसार का न्याय करेगा; और केवल मसीही परमेश्वर ही हमें बचाने की सामर्थ रखता है।

अपने पहले विश्वास के सूत्र में, प्रेरितों का विश्वास-वचन नये मसीहियों से मांग करता है कि वे झूठे देवताओं को त्याग दें जिनकी वे आराधना किया करते थे, और पवित्र वचन के परमेश्वर को एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में अंगीकार करें। और यह बुलाहट पवित्र वचन की आवश्यक शिक्षा को प्रतिबिम्बित करती है। बाइबल हर युग में हर व्यक्ति पर यह जिम्मेदारी डालती है कि वह यह अंगीकार करे कि पुराने और नये नियम का परमेश्वर ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। और यह मांग करती है कि वे केवल उसकी आराधना करें।

अब जबकि हम परमेश्वर की एकात्मकता को देख चुके हैं, तो हम उसकी सादगी, उसकी प्रकृति या तत्व की एकता पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए तैयार हैं।

सादगी

आपको याद होगा जब हमने एक पिछले अध्याय में त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा को परिभाषित किया तो हमने इस प्रकार कहा था: परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं, परन्तु तत्व केवल एक है। हमने यह भी कही कि "व्यक्ति" शब्द एक अलग, स्व-जागरूक व्यक्तित्व को दिखाता है, और "तत्व" शब्द परमेश्वर की मूलभूत प्रकृति को दिखाता है, या फिर पदार्थ जिस से वह बना है। जब हम परमेश्वर की सादगी के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में उसका तत्व होता है - उसकी आधारभूत प्रकृति, पदार्थ जो उसके अस्तित्व को बनाता है।

अब, धर्मविज्ञानी "साधारण" और "सादगी" जैसे शब्दों का प्रयोग तकनीकी रूप से करते हैं। हम यह नहीं कह रहे हैं कि परमेश्वर इस अर्थ में साधारण है कि उसे समझना आसान है। इसके विपरीत, हमारा मतलब है कि उसका तत्व विभिन्न पदार्थों का मेल नहीं है बल्कि केवल एक पदार्थ से निर्मित एकीकृत सम्पूर्णता है।

हम शुद्ध जल की कीचड़ से तुलना करके सादगी के इस विचार को समझा सकते हैं। एक तरफ, जल को एक साधारण पदार्थ के रूप में देखा जा सकता है। यह केवल पानी से बना है, और कुछ नहीं। परन्तु यदि हम अपने शुद्ध जल में मिट्टी मिला दें, तो यह कीचड़ बन जाता है। कीचड़ एक जटिल पदार्थ है क्योंकि यह दो अलग-अलग हिस्सों से बना है: जल और मिट्टी। परमेश्वर का तत्व पूर्णत: शुद्ध जल के समान है: यह केवल एक पदार्थ से निर्मित है।

लेकिन यह महत्वपूर्ण क्यों है? मसीहियत इस बात पर बल क्यों देती है कि परमेश्वर साधारण है और अलग-अलग पदार्थों से निर्मित नहीं है? इस सवाल का जवाब देने के लिए, आइए हम एक बार फिर त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा को देखें। त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा कहती है कि: परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं, परन्तु तत्व केवल एक है।

> त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा का केन्द्र व्यक्ति और तत्व के बीच का अन्तर है। तत्व के अनुसार परमेश्वर एक है और व्यक्ति के अनुसार तीन। वास्तव में हम कह सकते हैं कि परमेश्वर के साथ एक "क्या" और तीन "कौन" हैं। (डॉ. कीथ जाँनसन)

जितना बलपूर्वक बाइबल इस बात पर जोर देती है कि परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा - उतना ही बल इस बात पर देती है कि परमेश्वर केवल एक है। और कलीसिया के जीवन में बहुत जल्दी, धर्मविज्ञानियों ने निर्धारित कर लिया कि परमेश्वर के एक होने के बारे में बोलने का उपयोगी तरीका उसके तत्व या पदार्थ के संबंध में बोलना था। अतः, जब उन्होंने कहा कि परमेश्वर में एक साधारण, एकीकृत तत्व है, तो वे इस बात का इनकार कर रहे थे कि पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा तीन भिन्न परमेश्वर हैं जो किसी प्रकार त्रिएकत्व में जुड़ गए। और इसकी बजाय, वे पुष्टि कर रहे थे कि ये तीन व्यक्ति हमेशा से एक साथ एकमात्र परमेश्वर के रूप में विद्यमान रहे हैं।

इस प्रकार, कलीसिया ने इसे पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया कि मसीही तीन परमेश्वरों पर विश्वास नहीं करते हैं, जैसा कि अक्सर दूसरे धर्मों द्वारा हम पर दोष लगाया जाता है। इसके विपरीत, हम केवल एक परमेश्वर पर विश्वास करते हैं - एक दिव्य अस्तित्व - जो तीन व्यक्तियों के रूप में विद्यमान है।

> अक्सर मुसलमानों के साथ बात करने पर वे कहते हैं, त्रिएकत्व का मसीही विचार तीन परमेश्वरों या तीन ईश्वरों पर विश्वास की पुष्टि है। कलीसिया के इतिहास में किसी ने कभी इसकी पुष्टि नहीं की है क्योंकि इस पुष्टि के साथ कि पिता परमेश्वर है, पुत्र परमेश्वर है, और पवित्र आत्मा परमेश्वर है, उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक इस बात की भी पुष्टि की गई है कि परमेश्वर एक है। जीवित और सच्चा परमेश्वर एक है। अतः परमेश्वर के पूर्ण प्रकाशन को समझने का एकमात्र मार्ग यह कहना है, परमेश्वर एक है, और कोई दूसरा नहीं; पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा उस एक परमेश्वरत्व का हिस्सा हैं। कलीसिया की यह भाषा रही है कि वे उस एक परमेश्वरत्व में तीन व्यक्तियों के रूप में विद्यमान हैं और इसी कारण हम तीन ईश्वरों के होने की पुष्टि नहीं करते हैं। एक परमेश्वर, लेकिन तीन व्यक्तियों में। इसे पवित्र वचन में सिखाया गया है, कलीसिया ने इसकी पुष्टि की है और यह वास्तव में हमें इस प्रकार हमारे सारे धार्मिक प्रतिद्वन्दियों से अलग करता है।
>
> डॉ. स्टीफन वेलम

इस विचार को स्पष्ट रूप में एक और प्राचीन विश्वास-वचन में बताया गया है - नाईसीन विश्वास-वचन - जो कहता है:

> यीशु मसीह, परमेश्वर का एकलौता पुत्र... पिता के साथ तत्व में एक है।

प्रेरितों का विश्वास-वचन नाईसीन विश्वास-वचन से अधिक मूलभूत होने के कारण, यह इस विवरण का स्पष्ट वर्णन नहीं करता है। फिर भी, इसमें यह विचार निहित है कि हम केवल एक परमेश्वर में विश्वास करते हैं जो तीन व्यक्तियों के रूप में विद्यमान है।

एक परमेश्वर के तीन व्यक्तियों में विद्यमान होने पर मसीहियों के विश्वास करने के इस तथ्य के मसीही जीवन के लिए अनगिनत अर्थ हैं। उदाहरण के लिए, पारम्परिक मसीही आराधना सर्वदा से पूरी तरह त्रिएक रही है: हम त्रिएकत्व के तीनों व्यक्तियों की आराधना करते हैं, और हम अपने स्तुति गीतों और प्रार्थना विनतियों को उनमें से प्रत्येक के सम्मुख पेश करते हैं। किसी एक के पक्ष में त्रिएकत्व के

किसी भी व्यक्ति को अनदेखा करना स्वयं परमेश्वर को अनदेखा करना है। हमारा आदर, सेवा और प्रेम पिता के लिए, पुत्र के लिए, और पवित्र आत्मा के लिए है क्योंकि वे सब एक परमेश्वर हैं।

परमेश्वर के बारे में मूलभूत मसीही विचार और उसके अस्तित्व की प्रकृति को बताने के बाद, हम सर्वसामर्थी पिता शब्द पर ध्यान केन्द्रित करने, बाइबल द्वारा त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति, पिता परमेश्वर के बारे में सिखाई गई विशिष्ट बातों को देखने के लिए तैयार हैं।

सर्वसामर्थी परमेश्वर

सर्वसामर्थी परमेश्वर पर हमारी चर्चा चार भागों में विभक्त होगी। पहला, हम पवित्र वचन में परमेश्वर के लिए "पिता" शब्द को प्रयोग किए जाने के तरीके को देखेंगे। दूसरा, हम त्रिएकत्व के संबंध में पिता परमेश्वर के व्यक्तित्व को देखेंगे। तीसरा, हम उसके पितृत्व की प्रकृति, पिता की भूमिका में उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों को देखेंगे। और चौथा, हम उसकी सामर्थ पर चर्चा करेंगे। पहले "पिता" शब्द को देखें जिस प्रकार इसे पवित्र वचन में परमेश्वर के लिए प्रयोग किया गया है।

नाम

> बाइबल कम से कम तीन अलग-अलग अर्थों में "पिता" शब्द का प्रयोग करती है। पहला, इसे सारी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर के लिए प्रयोग किया गया है। नये नियम में इस अर्थ में इसके प्रयोग का एक उदाहरण 1 कुरिन्थियों 8:6 है जहाँ पौलुस पिता की पहचान ऐसे व्यक्ति के रूप में करता है जिसके द्वारा सब कुछ विद्यमान है। अब, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि इस अर्थ में परमेश्वर को पिता के रूप में संबोधित करने वाला प्रत्येक धर्मशास्त्रीय पद त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति के बारे में नहीं है। "पिता" शब्द का दूसरा प्रयोग विश्वासियों को पुत्र और पुत्रियों के रूप में गोद लेने के परिणामस्वरूप परमेश्वर के साथ बने उनके रिश्ते को दिखाता है। जब पौलुस रोमियों 8:15 में कहता है कि हमें लेपालकपन की आत्मा मिली है जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं, तो वह इस दूसरे अर्थ में "पिता" शब्द का प्रयोग कर रहा है। अन्त में, "पिता" शब्द यीशु मसीह और उसके पिता के बीच विद्यमान अद्वितीय रिश्ते को दिखाता है। हम इन तीन प्रयोगों का यह कहने के द्वारा संक्षेपण कर सकते हैं कि पहला सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में बताता है, दूसरा छुटकारा देने वाले परमेश्वर के बारे में बताता है, और तीसरा विशेषत: पुत्र के संबंध में पिता के व्यक्तित्व को बताता है।
>
> डॉ. कीथ जाँनसन

दुर्भाग्यवश, कुछ मसीहियों को यह सोचना गलत है कि जब भी बाइबल "पिता" शब्द का प्रयोग करती है, तो यह त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति के बारे में बात करती है। परन्तु त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा नये नियम के आने तक स्पष्टत: प्रकट नहीं थी। पुराने नियम में यहाँ वहाँ कुछ संकेत हैं जो परमेश्वरत्व में एक से अधिक व्यक्तियों के होने की ओर संकेत कर सकते हैं। परन्तु पुराना नियम परमेश्वर के एक होने पर अत्यधिक बल देता है।

अत:, पुराने नियम में जब "पिता" कहा जाता है, तो संकेत सम्पूर्ण त्रिएकत्व की ओर है, न कि केवल एक व्यक्ति की ओर। अब, कुछ अर्थों में, "पिता" शब्द का प्रयोग पिता के व्यक्तित्व पर बल देता है। परन्तु यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के तीन व्यक्तियों के नये नियम के स्पष्ट प्रकाशन से पूर्व, परमेश्वर के लिए प्रयुक्त सारे शब्द, "पिता" शब्द सहित, कुछ हद तक सम्पूर्ण त्रिएकत्व पर लागू होता था। व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 पद 6, और यशायाह अध्याय 63 पद 16 और अध्याय 64 पद 8 जैसे पद्यांशों में "पिता" शब्द सम्पूर्ण परमेश्वरत्व को बताता है। समझाने के लिए, हम पुराने नियम में "पिता" शब्द के प्रयोग के एक उदाहरण को देखेंगे। मलाकी अध्याय 2 पद 10 में, भविष्यद्वक्ता ये सवाल पूछता है:

> क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हम को उत्पन्न नहीं किया? (मलाकी 2:10)

यहाँ सम्पूर्ण परमेश्वरत्व - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सहित - को "पिता" कहा गया है क्योंकि सम्पूर्ण त्रिएकत्व ने मानवता की सृष्टि में भाग लिया। नया नियम इसे स्पष्ट करता है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा प्रत्येक ने एक अलग भूमिका निभाई। परन्तु पुराने नियम का यह पद्यांश परमेश्वरत्व के व्यक्तियों को इस तरह अलग-अलग नहीं बताता है। इसके विपरीत, यह सृष्टि में तीनों व्यक्तियों की भूमिका के कारण सामूहिक रूप से "पिता" शब्द का प्रयोग करता है।

मामले को कठिन बनाने के लिए, चूँकि नये नियम के लेखकों ने पुराने नियम से लिया, तो ऐसे समय भी हैं जब उन्होंने भी सम्पूर्ण त्रिएकत्व को पिता के सामान्य अर्थ में संबोधित किया। उदाहरण के लिए, ऐसा प्रतीत होता है कि मत्ती अध्याय 5 पद 45 और अध्याय 6 पद 6 से 18, और प्रेरितों के काम अध्याय 17 पद 24 से 29 में सम्पूर्ण त्रिएकत्व को "पिता" के रूप में वर्णित किया गया है। इन पद्यांशों में, सम्पूर्ण त्रिएकत्व को कई कारणों से "पिता" कहा गया है। कई बार इसलिए कि सम्पूर्ण परमेश्वरत्व ने संसार की सृष्टि में भाग लिया। दूसरे समयों पर इसलिए कि परमेश्वर के तीनों व्यक्ति वह नैतिक प्रमाप हैं जिनके अनुसार हमें जीना है। फिर से, समझाने के लिए हम केवल एक पद को देखें। याकूब अध्याय 1 पद 17 में, हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

> हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है। (याकूब 1:17)

इस पद से पहले, याकूब कहता है कि परमेश्वर का चरित्र नैतिक रूप से शुद्ध है। अत:, यहाँ उसका मतलब था कि परमेश्वर से जो कुछ आता है वह अच्छा है, और जो कुछ अच्छा है वह परमेश्वर की ओर है। चूँकि अच्छी वस्तुएँ हमारे त्रिएक परमेश्वर के सभी व्यक्तियों की ओर से आती हैं, इसलिए मसीही व्याख्याकार इसे अक्सर सम्पूर्ण त्रिएकत्व की ओर संकेत के रूप में देखते हैं। फिर से, पुराने नियम के समान, यहाँ पिता के व्यक्तित्व पर बल को देखना तार्किक है। परन्तु यह पुष्टि करना महत्वपूर्ण है कि पुत्र और पवित्र आत्मा भी हमें अच्छे वरदान देते हैं।

लेकिन, यह भी स्पष्ट है कि पवित्र वचन "पिता" शब्द का प्रयोग त्रिएकत्व के एक ऐसे व्यक्ति के लिए भी करता है जो पुत्र और पवित्र आत्मा से अलग है। हम इसे यूहन्ना अध्याय 1 पद 14 और 18; यूहन्ना अध्याय 5 पद 17 से 26; गलातियों अध्याय 4 पद 6; 2 पतरस अध्याय 1 पद 17 में देखते हैं। एक बार फिर इस बिन्दु को समझाने के लिए आइए दो उदाहरणों को देखें। 2 यूहन्ना पद 9 में, इन शब्दों को लिखते समय प्रेरित पिता और पुत्र के बीच अन्तर करता है:

> जो कोई... मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी। (2 यूहन्ना 9)

और यूहन्ना अध्याय 14 पद 16 और 17 में, अपने प्रेरितों को यह आश्वासन देते समय यीशु पिता को आत्मा से अलग ठहराता है:

> मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे - सत्य का आत्मा। (यूहन्ना 14:16-17)

अब जबकि हम देख चुके हैं कि किस प्रकार "पिता" नाम का प्रयोग पवित्र वचन में सम्पूर्ण परमेश्वरत्व के साथ-साथ त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति के लिए भी किया गया है, तो हम त्रिएकता के अन्य व्यक्तियों से अलग पिता परमेश्वर के व्यक्तित्व को देखने के लिए तैयार हैं।

व्यक्ति

पिता के पुत्र और पवित्र आत्मा से जुड़ाव का कई प्रकार से वर्णन किया जा सकता है। परन्तु धर्मविज्ञान के इतिहास में, त्रिएकता पर दो विशेष दृष्टिकोण सामने आए हैं। विशेषत:, इसके बारे में तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता और आर्थिक त्रिएकता के अर्थ में बात की जाती रही है। ये दोनों विधियाँ उसी त्रिएकता की बात करती हैं - पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा - परन्तु ये परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों के बीच संबंध के विभिन्न पहलूओं पर बल देती हैं।

एक तरफ, जब हम परमेश्वर के अस्तित्व पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो आमतौर पर तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता के बारे में बात की जाती है। तत्वमीमांसा शब्द का अर्थ है अस्तित्व से संबंधित। अत: जब हम तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता की बात करते हैं, तो हम त्रिएकता को अस्तित्व या तत्व की दृष्टि से देखते हैं। हम इस बात को देखते हैं कि कैसे त्रिएकता के तीनों व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़े हैं, और कैसे वे एक तत्व में साझी हैं।

तत्वमीमांसा के दृष्टिकोण से, परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्ति असीम, अनन्त और कभी न बदलने वाले हैं। और प्रत्येक में वही आवश्यक दिव्य गुण हैं, जैसे बुद्धि, सामर्थ, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य।

दूसरी तरफ, हम आमतौर पर कहते हैं कि हम आर्थिक त्रिएकता के बारे में बात कर रहे हैं जब हम इस बात को देखते हैं कि परमेश्वर के व्यक्ति आपस में किस प्रकार व्यवहार करते हैं, और वे एक व्यक्ति के रूप में किस प्रकार एक-दूसरे से संबंधित हैं। "आर्थिक" शब्द का अर्थ है "घर के प्रबन्ध से संबंधित।" अत:, जब हम त्रिएकता के आर्थिक पहलू की बात करते हैं, तो हम इस बात का वर्णन कर रहे हैं कि किस प्रकार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा अलग-अलग व्यक्तित्वों के रूप में एक-दूसरे से संबंधित हैं।

जब हम आर्थिक दृष्टि से त्रिएकता को देखते हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति की अलग ज़िम्मेदारियाँ, अधिकार का एक अलग स्तर, और एक अलग निर्धारित भूमिका के साथ करने के लिए एक अलग कार्य है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक-दूसरे से बातचीत करते हैं। वे एक-दूसरे के साथ अनुबंध करते हैं। वे एक-दूसरे के लिए कार्य करते हैं। और वे दूसरे कई तरीकों से व्यवहार करते हैं।

तत्वमीमांसा और आर्थिक दोनों दृष्टिकोणों से, पिता को प्रथम व्यक्ति कहा जाता है। पिता को तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता का प्रथम व्यक्ति कहा जाता है क्योंकि पुत्र पिता के द्वारा है, और पवित्र आत्मा पिता से आता है।

देखें 1 यूहन्ना अध्याय 4 पद 9 पुत्र की उत्पत्ति के बारे में क्या कहता है:

> जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। (1 यूहन्ना 4:9)

"एकलौता" शब्द यूनानी भाषा के शब्द मोनोजीनस से आता है। दुर्भाग्यवश, आरम्भिक कलीसिया में कुछ लोगों ने सोचा कि इसका अर्थ है कि पुत्र सृष्टि है और पूरी तरह दिव्य नहीं है। आज भी कई गलत सम्प्रदाय पुत्र की दिव्यता का इनकार करते हैं क्योंकि वह "एकलौता" कहलाता है।

इस गलत शिक्षा के उत्तर में, पारम्परिक रूप से मसीहियों ने कहा है कि पुत्र अनन्तकाल से पिता के साथ है या अनन्तकाल से पिता का एकलौता है। ये शब्द इस बात पर बल देते हैं कि ऐसा कोई समय नहीं था जब पुत्र विद्यमान नहीं था। सुनें किस प्रकार यीशु यूहन्ना अध्याय 15 पद 26 में पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में कहता है:

> परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। (यूहन्ना 15:26)

"निकलता है" शब्द यूनानी शब्द एकपोरियूमाई का अनुवाद है, और इसे अक्सर "आता है" के रूप में अनुवादित किया जाता है। पारम्परिक रूप से इस शब्द को पवित्र आत्मा के अस्तित्व के स्रोत के संकेत के रूप में समझा जाता रहा है।

दुर्भाग्यवश, ऐसे पद्यांशों के कारण कुछ लोगों ने गलत निष्कर्ष निकाल लिए हैं कि पवित्र आत्मा अनन्त या पूर्णतः दिव्य नहीं है। इस कारण पारम्परिक मसीही धर्मविज्ञान इस बात पर जोर देने के प्रति सावधान रहा है कि पवित्र आत्मा त्रिएकता का पूर्ण सदस्य है, और वह पूर्णत: दिव्य है, यद्यपि उसका व्यक्तित्व अनन्त रूप में पिता से आता है।

तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता का प्रथम व्यक्ति होने के अतिरिक्त, पिता आर्थिक त्रिएकता का भी प्रथम व्यक्ति कहलाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से, पिता को "प्रथम व्यक्ति" कहा जाता है क्योंकि जिस प्रकार घर में मानवीय पिता का अधिकार होता है उसी प्रकार पिता का दूसरे दो व्यक्तियों पर अधिकार है।

हम पुत्र के ऊपर पिता के अधिकार को कई प्रकार से देख सकते हैं। जैसे, पुत्र पिता की इच्छा को पूरा करता है, जैसा हम यूहन्ना अध्याय 6 पद 40 में देखते हैं। और इफ़िसियों अध्याय 1 पद 20 से 22 जैसे पद्यांशों के अनुसार पुत्र को अधिकार और राज्य पिता से मिलता है। वास्तव में, पवित्र वचन हमें बार-बार बताता है कि पुत्र का राज्य पिता के राज्य के अधीन है। इसे हम बार-बार इस विचार में देखते हैं कि यीशु के दाहिने बैठता है, यानी, परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर, जैसा भजन 110 पद 1 और इब्रानियों अध्याय 1 पद 3 में लिखा है। परमेश्वर का दाहिना हाथ निश्चित रूप से सम्मान और सामर्थ का स्थान है, परन्तु यह स्वयं सिंहासन नहीं है। और अन्त में, पुत्र अपना राज्य पिता को फेर देगा, जैसा पौलुस 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 पद 24 में सिखाता है। सारांश में, आर्थिक त्रिएकता में, पिता का पुत्र के ऊपर अधिकार है।

> पिता और पुत्र के बीच संबंध और सम्पूर्ण अधिकार के प्रयोग का सवाल जटिल है। परन्तु, यह वास्तव में पिता और पुत्र की अलग-अलग भूमिकाओं से संबंधित है जिन्हें वे त्रिएकता में निभाते हैं। और यह तथ्य कि अपनी भूमिका में पुत्र स्वेच्छा से पिता के अधीन है। वह पिता की इच्छा के लिए अपने आपको समर्पित करने हेतु पृथ्वी पर आया और पिता सारे अधिकार का प्रयोग करता है। परन्तु साथ ही ये प्रेम के संबंध हैं जिसमें पिता पुत्र से प्रेम करता है और पुत्र पिता से प्रेम करता है, और वे त्रिएकता में एक-दूसरे को प्रसन्न करने और सम्मान देने की कोशिश करते हैं। अत:, हमें उनकी भूमिकाओं के बीच अन्तर को और उनके प्रेम को संबंध को थोड़ा खोलना होगा। (डॉ. साइमन वाइबर्ट)

इसी प्रकार, पिता को पवित्र आत्मा पर अधिकार है। उदाहरण के लिए, हमें अक्सर बताया जाता है कि पिता आत्मा को भेजता है, जैसा लूका अध्याय 11 पद 13 और इफ़िसियों अध्याय 1 पद 17 में लिखा है। हम प्रेरितों के काम अध्याय 10 पद 38 में यह भी सीखते हैं कि पिता ने ही पुत्र को आत्मा का सामर्थ दिया। पूरे पवित्र वचन में, पवित्र आत्मा संसार में पिता का प्रतिनिधि है, जो पिता से निर्देश पाकर उसकी इच्छा को पूरा करता है। आर्थिक त्रिएकता में, पिता का पवित्र आत्मा पर वैसा ही अधिकार है, जैसा उसका पुत्र पर अधिकार है।

> पिता का अधिकार सर्वदा एक प्रेम का अधिकार है। पिता का अधिकार एक ऐसा अधिकार है जो पुत्र से प्रेम करता है, चाहता है कि पुत्र की महिमा हो, ठीक उसी प्रकार जैसे पुत्र भी पिता की महिमा चाहता है। और अन्ततः, यदि पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा में प्रेम का दिल है, तो पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा की इच्छाओं के बीच असहमति होने का विचार इस अर्थ में एक प्रकार से नाटकीय बन जाता है क्योंकि यदि पुत्र अनन्त रूप से और आत्मा अनन्त रूप से पिता की इच्छा को पूरा करना चाहते हैं और पिता अनन्त रूप से पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करना और आदर देना चाहता है तो त्रिएकता की इस संगति में अस्तित्व की सर्वसम्मति के कारण, अवश्य ही परमेश्वर के जीवन में इच्छा की सर्वसम्मति, प्रेम की एक सर्वसम्मति है।
>
> डॉ. स्टीव ब्लेकमोर

इस समझ के साथ कि पवित्र वचन में "पिता" शब्द और उसके व्यक्तित्व का किस तरह से प्रयोग हुआ है, हम सृष्टि और मानवता के ऊपर उसके पितृत्व की प्रकृति को देखने के लिए तैयार हैं।

पितृत्व

परमेश्वर के पितृत्व का विस्तार से वर्णन करने से पूर्व, हमें यह बताने के लिए रुकना चाहिए कि परमेश्वर के पितृत्व के बारे में बात करने वाले अधिकांश वचन पुराने नियम से आते हैं, परमेश्वर द्वारा अपनी त्रिएक प्रकृति को स्पष्ट रूप में प्रकट करने से पूर्व के हैं। इन पद्यांशों में, "पिता" शब्द सबसे पहले सम्पूर्ण त्रिएकत्व को बताता है, न कि केवल पिता को।

लेकिन, नया नियम परमेश्वर के पितृत्व को प्राथमिक रूप से पिता के व्यक्तित्व से जोड़ता है। इसलिए, इन पुराने नियम के पद्यांशों में पिता के व्यक्तित्व पर बल को देखना वैध है।

परमेश्वर के पितृत्व के बहुत से पहलू हैं जिन पर हम विचार कर सकते हैं। परन्तु हम पवित्र वचन के तीन सबसे मुख्य विचारों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। पहला, हम सृष्टिकर्ता के रूप में पिता की भूमिका को देखेंगे। दूसरा, हम सृष्टि और लोगों पर राजा के रूप में परमेश्वर के स्थान के अर्थ में उसके पितृत्व को देखेंगे। और तीसरा, हम इस विचार पर ध्यान केन्द्रित करेंगे कि परमेश्वर अपने लोगों का मुखिया है। हम उसके पितृत्व के पहलू के रूप में सृष्टिकर्ता की उसकी भूमिका के अनुसंधान के साथ शुरू करेंगे।

सृष्टिकर्ता

वृहद् अर्थ में, पवित्र वचन कई बार परमेश्वर को सारी सृष्टि का पिता कहता है। उदाहरण के लिए, हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 पद 6, यशायाह अध्याय 43 पद 6 और 7, और अध्याय 64 पद 8, मलाकी अध्याय 2 पद 10, और लूका अध्याय 3 पद 38 जैसे पद्यांशों में पाते हैं।

एक उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 17 पद 26 से 28 में एथेने के लोगों से कहे गए पौलुस के वचनों को सुनें:

> उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास की सीमाओं को बान्धा है... जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश हैं। (प्रेरितों के काम 17:26-28)

यहाँ पौलुस अन्यजाति कवियों क्लिंथिस और अरेतुस को उद्धृत करता है, जिन्होंने कहा था कि ज्यूस मानवजाति का पिता है क्योंकि उसी ने उनको रचा था। निस्संदेह, पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि वास्तविक सृष्टिकर्ता बाइबल का परमेश्वर था, न कि ज्यूस। परन्तु पौलुस ने इस विचार की पुष्टि की कि किसी को रचने का अर्थ है उसका पिता बनना।

> बाइबल को मानवीय भाषा में लिखा गया था। सृष्टिकर्ता परमेश्वर के साथ हमारे मानवीय संबंध को अक्सर एक पिता और उसके बच्चों के बीच संबंध के अर्थ में अभिव्यक्त किया जाता है। इस सन्दर्भ में, परमेश्वर का पितृत्व हमारी उत्पत्ति और उसके अधिकार का प्रतिनिधित्व करता है।
>
> डॉ. पॉल चाँग

जिस प्रकार मानवीय पिता अपने बच्चों के प्रति धैर्यवान होते हैं, सृष्टि पर परमेश्वर का सामान्य पितृत्व उसे हमारे पापी संसार के प्रति बड़ा धीरज दिखाने के लिए प्रेरित करता है, विशेषत: पापी मानवता के प्रति। इसका यह मतलब नहीं है कि वह सृष्टि से सर्वदा न्याय को रोके रहेगा। परन्तु वह इस बात को समझने में सहायता करता है कि वह क्रोध में धीमा और दया दिखाने में तीव्र क्यों है। जैसा हम भजन 145 पद 8 और 9 में पढ़ते हैं:

> यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति करुणामय है। यहोवा सभों के लिए भला है, और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है। (भजन 145:8-9)

सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर की भूमिका को देखने के बाद, अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि राजा के रूप में उसकी भूमिका उसके पितृत्व से किस प्रकार संबंधित है।

राजा

प्राचीन पूर्वी देशों में, साधारण लोगों द्वारा राजाओं को पिता के रूप में और राजाओं द्वारा अपनी प्रजा को बच्चों के रूप में संबोधित करना आम बात थी। यह भाषा पवित्र वचन में भी अक्सर प्रतिबिम्बित होती है। उदाहरण के लिए, इस्राएली दाऊद को अपना पिता कहते थे क्योंकि वह उनका राजा था। निस्संदेह, कुछ इस्राएली दाऊद के वंशज थे, अत: शाब्दिक अर्थ में दाऊद उनका पूर्वज था। परन्तु जब पूरा देश दाऊद को पिता कहता था, तो उनका मतलब था कि वह उनका राजा था। मरकुस अध्याय 11 पद 10 को देखें, जहाँ भीड़ इस प्रकार चिल्लाई:

> हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है! (मरकुस 11:10)

यहाँ, इस्राएल के ऊपर दाऊद का पितृत्व स्पष्ट रूप से उसके राज्य से संबंधित है। इसी प्रकार, प्रेरितों के काम अध्याय 4 पद 25 और 26 में, कलीसिया ने इन शब्दों में परमेश्वर की स्तुति की:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, कि अन्य जातियों ने हुल्लड़ क्यों मचाया? और देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं? प्रभु और उसके मसीह के विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गए। **(प्रेरितों के काम 4:25-26)**

एक बार फिर, दाऊद को इस्राएल का पिता कहा गया क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त व्यक्ति था, राजा जिसने यहोवा के सिंहासन पर बैठकर शत्रु जातियों के विरूद्ध युद्ध में इस्राएल की अगुवाई की। परन्तु प्राचीन लोग राजाओं को अपना पिता क्यों कहते थे?

> प्राचीन संसार में राजा स्वयं को “पिता” कहते थे क्योंकि वे अपने आप को पितृमय चित्रित करते थे, यानी वे अपने लोगों का ध्यान रख रहे थे, उनकी ज़रूरतों को पूरा कर रहे थे, और उनकी सुरक्षा करते थे। अब, वास्तविकता में, इसमें से अधिकाँश केवल दिखावा था क्योंकि प्राचीन संसार के राजा, ज्यादातर, लोगों की सेवा करने की बजाय खुद की सेवा करते थे। परन्तु साथ ही, जब परमेश्वर ने स्वयं को इस्राएल पर प्रकट किया, उसने राजाओं के पिता होने के इस आम विचार का प्रयोग किया। और परमेश्वर का हमारा पिता होना, शाही पिता, राजकीय पिता होना कोई दिखावे के अन्तर्गत नहीं है, यह सच्चाई है। परमेश्वर हमारा ध्यान रखता है। वह हमारे लिए प्रबन्ध करता है। वह एक पिता के समान हमारी रक्षा करता है। अतः वह अपने सम्पूर्ण साम्राज्य, पूरे राज्य का पिता है। **(डॉ. रिचर्ड प्रैट, जूनियर)**

और जिस प्रकार मानवीय राजा अपने राज्यों के पिता कहलाते थे, उसी प्रकार परमेश्वर को “पिता” कहा गया क्योंकि वह महान राजा था जो संसार के सारे राजाओं पर राज करता था, और इस कारण कि वह प्रत्यक्ष रूप में अपनी चुनी हुई जाति इस्राएल पर राज करता था।

सुनें यशायाह अध्याय 63 पद 15 और 16 यहोवा के पितृत्व के बारे में क्या कहता है:

> स्वर्ग से, जो तेरा पवित्र और महिमापूर्ण वासस्थान है, दृष्टि कर। तेरी जलन और पराक्रम कहाँ रहे? तेरी दया और करुणा मुझ पर से हट गई हैं। निश्चय तू हमारा पिता है... हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ाने वाला है; प्राचीनकाल से यही तेरा नाम है। **(यशायाह 63:15-16)**

यहाँ, परमेश्वर को पिता कहा गया है क्योंकि वह स्वर्गीय सिंहासन पर बैठा है, सामान्य रूप से पूरी सृष्टि पर, और विशेष रूप में इस्राएल और यहूदा पर शासन करता है। विशेषत:, विनती दिव्य राजा से है कि वह युद्ध में अपनी सेना की अगुवाई करे, शत्रुओं को पराजित करके अपने लोगों को छुटकारा दे।

इस बात को जानने से हमें अत्यधिक भरोसा और सांत्वना मिलनी चाहिए कि हमारा दिव्य पिता उसी प्रकार हमारी देखभाल करता है जिस प्रकार एक पिता अपने बच्चों की देखभाल करता है। अपने बल पर, हम इस संसार की बुराइयों के विरूद्ध खड़े नहीं रह सकते हैं। परन्तु हमारा दिव्य राजा एक पिता के समान हमसे प्रेम करता है, और हमारी सहायता के लिए तत्पर रहता है।

वास्तव में, यीशु ने इस विचार को प्रभु की प्रार्थना में सिखाया था जब उसने अपने चेलों से इस प्रकार प्रार्थना करने को कहा “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है।” प्रभु की प्रार्थना की इस विनती में, परमेश्वर को हमारे स्वर्गीय पिता के रूप में अंगीकार किया गया है। और पूरी बाइबल में, स्वर्ग की तस्वीर एक समान है: यह परमेश्वर का सिंहासन है, वह स्थान जहाँ बैठकर वह राजा के रूप में शासन करता है। अत:, जब यीशु ने अपने चेलों से प्रार्थना करने को कहा, “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है,” उसका

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मतलब था कि वे अपने शाही पिता के रूप में प्रार्थना करें जो स्वर्ग में दिव्य राजा के रूप में अपने सिंहासन पर विराजमान है। हमारा भरोसा कि परमेश्वर हमें रोज की रोटी देगा, हमारे पापों को क्षमा करेगा, हमें परीक्षा में न डालेगा, और हमें बुराई से बचाएगा, इस तथ्य पर आधारित है कि हमारे प्रेमी राजा के रूप में, उसके पास इन कार्यों को करने की सामर्थ और इच्छा दोनों है।

सृष्टिकर्ता और राजा के रूप में परमेश्वर की समझ को ध्यान में रखते हुए, हम उसके पितृत्व के एक पहलू के रूप में परिवार के मुखिया की उसकी भूमिका को देखने के लिए तैयार हैं।

मुखिया

> मेरे लिए एक रुचिकर बात यह है कि धर्मविज्ञान के सर्वदा पासबानी अर्थ होते हैं। जैसा हमारा विश्वास होता है हम उसी प्रकार के लोग बनते हैं, और पिता परमेश्वर के संबंध में यह सच है। मैं सोचता हूँ यह दोनों तरफ कार्य करता है-उनके लिए जिनके पिता अच्छे थे, और उनके लिए जिनके पिता अच्छे नहीं थे। मैं इस बात में भाग्यशाली हूँ कि मेरे पिता अच्छे थे, इस कारण मेरे लिए परमेश्वर को अपने स्वर्गीय पिता के रूप में देखना कभी मुश्किल नहीं रहा। जो कुछ मेरे पिता ने मुझ से कहा, और मेरे लिए किया, और जिस प्रकार हम एक-दूसरे से संबंधित थे - वह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था, और पिता परमेश्वर को मेरे लिए एक बहुत ही सकारात्मक अर्थ में लाता है। परन्तु वर्षों के दौरान मैं ऐसे लोगों से मिला हूँ और उनके साथ काम किया है जिनके लिए पितृत्व की भाषा बहुत नकारात्मक, बहुत चुनौतीपूर्ण, बहुत मुश्किल थी। परन्तु मुझे याद है एक दिन मेरी एक छात्रा ने इसे मेरे सामने कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया, उसने कहा कि "परमेश्वर मेरे लिए एक ऐसा पिता बना जो मेरे पास कभी नहीं था।" और, इसलिए मैं सोचता हूँ कि जब हम अभाव के स्थान से भी परमेश्वर के पितृत्व का अनुसंधान करते हैं, तो चाहे अपने सांसारिक पिता के साथ हमारा वास्तविक अनुभव वैसा रहा हो या नहीं, हमें पता चलता है कि परमेश्वर का हृदय एक ऐसा हृदय है जो हमारे प्रति खुला है।
>
> डॉ. स्टीव हार्पर

हर कोई परिवार के मुखिया के विचार से परिचित है। आमतौर पर यह माता-पिता, दादा-दादी, या रिश्तेदारों में से कोई एक होता है जो परिवार या घर के लिए निर्णय लेता है। पवित्र वचन अक्सर अपने लोगों के साथ परमेश्वर के रिश्ते को इन्हीं अर्थों में बताता है।

पुराने नियम में कभी-कभी, हमें परमेश्वर की मानवजाति के परिवार का मुखिया होने की झलक मिलती है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति अध्याय 5 पद 1 से 3 में, मूसा ने आदम के साथ परमेश्वर के संबंध का वर्णन उसी प्रकार किया जिस प्रकार उसने आदम का उसके पुत्र, शेत के साथ संबंध का वर्णन किया।

पुराने नियम में कई बार, परमेश्वर को इस्राएल जाति के मुखिया के रूप में चित्रित किया गया है। हम इसे व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 पद 31, भजन 103 पद 13, और नीतिवचन अध्याय 3 पद 12 जैसे स्थानों पर लोगों के प्रति उसकी चिन्ता में देखते हैं। एक उदाहरण के रूप में, होशे अध्याय 11 पद 1 में यहोवा के वचनों को देखें:

> जब इस्राएल बालक था, तब मैं ने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया। (होशे 11:1)

यहाँ पर यहोवा अपने आप को एक अभिभावक के रूप में चित्रित करता है जिसने बचपन से इस्राएल जाति से प्रेम किया था। हम गिनती अध्याय 12 पद 7 में भी इस्राएल के मुखिया के रूप में परमेश्वर का वर्णन देखते हैं, जहाँ परमेश्वर ने मूसा के बारे में कहा:

मेरा दास मूसा; वह तो मेरे सब घरानों में विश्वासयोग्य है। (गिनती 12:7)

"घर" शब्द इब्रानी भाषा के बेइत से लिया गया है। यह एक सामान्य शब्द है जो न केवल एक मकान को, बल्कि उसमें रहने वाले लोगों को भी बताता है। यहाँ, मूसा को एक पुत्र या सेवक के रूप में बताया गया है जो घर के मुखिया के परिजनों और सम्पत्ति पर शासन करता है, इसका अर्थ है कि परमेश्वर इस्राएल जाति का मुखिया है।

निस्संदेह, परिवार के मुखिया के रूप में परमेश्वर का वर्णन नये नियम में भी है। मत्ती अध्याय 7 पद 9 से 11, और लूका अध्याय 11 पद 11 से 13 में, यीशु ने सिखाया कि पिता हमारी प्रार्थनाओं को उसी प्रकार उत्तर देता है जिस प्रकार मानवीय पिता अपनी सन्तानों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यूहन्ना अध्याय 1 पद 12 और 13 में, तथा 1 यूहन्ना अध्याय 2 पद 29 और अध्याय 3 पद 1 में, हम सीखते हैं कि पिता हम से प्रेम करता है क्योंकि हम ने उसके परिवार में जन्म लिया है। और इब्रानियों अध्याय 12 पद 5 से 10 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर हमारी भलाई के लिए एक मानवीय पिता के समान हमारी ताड़ना करता है। और 1 तीमुथियुस अध्याय 3 पद 15 और 1 पतरस अध्याय 4 पद 17 जैसे पद्यांशों में, कलीसिया को परमेश्वर का घराना और परिवार कहा गया है।

> मेरा विश्वास है कि परमेश्वर के पितृत्व के अद्‌भुत पासबानी अर्थ हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात जो हम देखते हैं: परमेश्वर पिता है। मेरा मतलब है, यह एक अद्‌भुत दृश्य है कि पवित्र वचन में पिता कैसा है, परमेश्वर कैसा है। अतः, शुरूआत से ही हम देखते हैं कि परमेश्वर के लिए परिवार बहुत महत्वपूर्ण है। और मेरा विश्वास है कि व्यवस्थाविवरण 6 से जहाँ यहोवा कहता है, "सुन, मैं इसी प्रकार व्यवस्था और परमेश्वर के प्रेम को स्थिर करूँगा; यह परिवारों के द्वारा होगा।" जब अभिभावकों के कन्धे, उनका जीवन बच्चों के जीवन से रगड़ खाता है, तो वहाँ स्पष्टतः अद्‌भुत बातें होती हैं। परिवार परमेश्वर के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मैं सोचता हूँ आप नीचे देखें और आप देखेंगे कि पिता भी परिवार के लिए महत्वपूर्ण हैं। और पासबानी मतलब, आप पूरे संसार में देख सकते हैं जहाँ पिता मजबूत हैं, वहाँ संस्कृति भी मजबूत है। जहाँ संस्कृतियों में पिता कमजोर हो जाते हैं, संस्कृतियों के अन्दर कमजोर हो जाते हैं, वहाँ की चाल कमजोर हो जाती है जिसे केवल मातृत्व से नहीं बदला जा सकता है। हमें मजबूत माताओं की आवश्यकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु पिता अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, और मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर के पितृत्व में एक बात जो हम देखते हैं वह यह कि यह बहुत सक्रिय है। मैं देखता हूँ कि जब पितृत्व का अभाव होता है तो आपके साथ दुर्व्यवहार में वृद्धि होती है, आपके पास शिक्षा का अभाव होता है, अपराध बढ़ जाते हैं। और संस्कृतियों में यह गड़बड़ तब होती है जब पितृत्व के बारे में आपकी अवधारणा कमजोर होती है और यह तब होगा जब परमेश्वर के पिता होने की आपकी अवधारणा कमजोर है।
>
> डॉ. मैट फ्रीडमैन

अब सर्वसामर्थी पिता के नाम, व्यक्तित्व और पितृत्व को देखने के बाद, हम अपनी इच्छा को पूरी करने की उसकी असीम सामर्थ को जाँचने के लिए तैयार हैं।

सामर्थ

एक बार फिर प्रेरितों के विश्वास-वचन में विश्वास के पहले सूत्र को देखें। यह कहता है:

> मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,
> जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

जब प्रेरितों का विश्वास-वचन कहता है कि पिता परमेश्वर सर्वसामर्थी है, तो इसका मतलब है कि उसकी सामर्थ असीम, अतुल्य है। पारम्परिक धर्मविज्ञानी शब्दों में, सर्वसामर्थ कहा जाता है, जिसका मूल शब्द है ओमनी यानी सब, और पोटेन्सी यानी सामर्थ।

पिता की सामर्थ असीम है क्योंकि वह जो कुछ चाहता है उसे पूरा करने की ताकत और योग्यता उसमें है। और यह अतुल्य है क्योंकि इस प्रकार की सामर्थ केवल उसी के पास है।

हम पिता की सामर्थ के दोनों पहलूओं को देखेंगे जिनका हमने अभी वर्णन किया है: यह तथ्य कि यह असीम है, और तथ्य कि यह अतुल्य है। आइए उसकी सामर्थ की असीम प्रकृति से शुरू करें।

असीम

पवित्र वचन बताता है कि पिता जो कुछ चाहता है उसे पूरा करने की सामर्थ उसके पास है। और यह इस असीम सामर्थ को कई विभिन्न तरीकों से प्रदर्शित करता है। यह बताता है कि उसमें ब्रह्माण्ड को रचने और नाश करने की सामर्थ है। यह बताता है कि उस में मौसम को नियन्त्रित करने, युद्ध में अपने शत्रुओं को हराने, मानवीय सरकारों पर शासन करने और उन पर नियन्त्रण करने, सामर्थी आश्चर्यकर्म करने, और अपने लोगों को बचाने की सामर्थ है। देखें कि यिर्मयाह अध्याय 10 पद 10 से 16 में यिर्मयाह नबी किस प्रकार यहोवा का वर्णन करता है:

> यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है। उसके प्रकोप से पृथ्वी कांपती है, और जाति जाति के लोग उसके क्रोध को सह नहीं सकते।... उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ से बनाया, उस ने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है। जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, और पृथ्वी की छोर से वह कुहरे को उठाता है। वह वर्षा के लिए बिजली को चमकाता, और अपने भण्डार में से पवन चलाता है।... वह तो सब का सृजनहार है, और इस्राएल उसके निज भाग का गोत्र है; सेनाओं का यहोवा उसका नाम है। (यिर्मयाह 10:10-16)

अन्तिम रूप से इस रचे हुए संसार के प्रत्येक पहलू पर परमेश्वर ही नियन्त्रण करता है। वह जो कुछ चाहता है उसे करने की सामर्थ उसके पास है। यशायाह अध्याय 46 पद 10 और 11 में, यहोवा स्वयं संक्षेप में अपनी सामर्थ को इस प्रकार बताता है:

> मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करुंगा।... मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा; मैं ने यह विचार बान्धा है और उसे सफल भी करूँगा। (यशायाह 46:10-11)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> परमेश्वर की सर्वसामर्थ विश्वासियों के रूप में हमारे लिए एक अच्छी यादगार है कि जब संसार नियन्त्रण से बाहर होता प्रतीत होता है, जब यह अव्यवस्था में गिरता प्रतीत होता है, तो ऐसा नहीं है। परमेश्वर को उस से बड़े किसी स्रोत या सामर्थ से बान्धा नहीं जा सकता है। संसार, चाहे यह कैसा भी प्रतीत हो, संसार नियन्त्रण से बाहर नहीं जा रहा है, परमेश्वर सर्वोच्च है, हम भरोसा कर सकते हैं कि वह हारा हुआ नहीं है, और यह ऐसे समयों में हमें विश्वास के साथ चलने की सामर्थ देता है जो हमारे सीमित दृष्टिकोण में हमें रहस्यमयी प्रतीत होते हैं। जब हमें वह सब दिखाई नहीं देता है जिसे परमेश्वर देखता है, तो यह जानना अच्छा है कि परमेश्वर का नियन्त्रण और उसकी सामर्थ उसकी इच्छा के विरूद्ध उसके हाथ से निकल नहीं गए हैं। जो कुछ मेरे पास आ रहा है, जो कुछ मेरे जीवन में हो रहा है, वह परमेश्वर के प्रेमी हाथ के अधिकार के अन्तर्गत हो रहा है। और मैं उस समय भी भरोसा कर सकता हूँ जब मैं अपनी परिस्थितियों को समझ न पाऊँ, कि मैं जानता हूँ कि मुझे स्थिर रखने वाला परमेश्वर इसके बीच में मेरे साथ चल रहा है।
>
> डॉ. रॉबर्ट जी. लिस्टर

बाइबल में, पवित्र वचन आमतौर पर परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के छुटकारे को उसकी सामर्थ के आदर्श प्रदर्शन के रूप में इंगित करता है। पुराने नियम में, हम बार-बार पढ़ते हैं कि निर्गमन में उसने अपनी सामर्थ को साबित किया जब उसने मिस्रियों पर विपत्तियों को भेजा, इस्राएलियों को बँधुआई से मुक्त किया, मरुभूमि में चालीस वर्ष तक उन्हें स्वर्ग का भोजन देकर चलाया, और उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय प्रदान की। प्राचीन इस्राएल के मन में, निर्गमन परमेश्वर की छुटकारा देने वाली सामर्थ का सर्वोत्तम उदाहरण था जिसे वे जानते थे।

हम निर्गमन अध्याय 14 पद 31; गिनती अध्याय 14 पद 13; और व्यवस्थाविवरण अध्याय 9 पद 26 से 29 जैसे पद्यांशों में, पूरी व्यवस्था की पुस्तकों के दौरान निर्गमन में परमेश्वर की सामर्थ के उद्धरण को देखते हैं। हम इस विषय को पुराने नियम हर दूसरे हिस्से में देखते हैं। हम इस ऐतिहासिक पुस्तकों में 2 राजा अध्याय 17 पद 36 में पाते हैं; काव्यात्मक पुस्तकों में भजन 66 पद 3 से 6 में; और भविष्यद्वाणी की पुस्तकों में यशायाह अध्याय 63 पद 12 जैसे स्थानों पर पाते हैं।

अब, ऐसा नहीं है कि प्राचीन इस्राएलियों ने अनुग्रह के द्वारा विश्वास से यहोवा में प्राप्त आत्मिक छुटकारे की अगम्य महानता को अनदेखा किया। उनके लिए इस प्रकार की बातों कहना बिल्कुल वैध था जैसे, "मैं विश्वास से परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा करता हूँ।" परन्तु बहुत से पुराने नियम के लेखकों ने इस प्रकार की बातों को कहना ज्यादा जरूरी समझा कि, "परमेश्वर ने अकेले हमारी सम्पूर्ण जाति को दासत्व से मुक्त करके अपनी सामर्थ को साबित किया।" और इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। आखिर, निर्गमन में परमेश्वर की ताकत के बाहरी प्रदर्शन इतने वास्तविक थे कि अविश्वासी मिस्री भी क़ायल हो गए थे।

परमेश्वर की इस असीम सामर्थ की समझ को ध्यान में रखते हुए, हमें इस बात को बताने के लिए रुकना चाहिए कि इस असीम सामर्थ के बावजूद कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर नहीं कर सकता या नहीं करेगा। विशेषत:, पिता की प्रकृति उसके द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य का ध्यान रखती है। परिणामस्वरूप, वह कभी भी कुछ ऐसा नहीं करता जो उसकी प्रकृति के विरूद्ध हो।

प्रकृति एक विस्तृत शब्द है जिसमें आवश्यक एवं व्यक्तिगत दोनों गुण शामिल हैं। हम इसे व्यक्ति का मूलभूत चरित्र; या किसी के अस्तित्व के केन्द्रीय पहलू कह सकते हैं। पिता के संबंध में, उसकी प्रकृति में न केवल उसका अस्तित्व और उसका चरित्र शामिल है, बल्कि त्रिएकता के अन्य सदस्यों के

साथ उसके संबंध भी शामिल हैं। और पिता की प्रकृति पूर्णत: निर्णायक एवं अपरिवर्तनीय है, इसलिए वह अपनी सामर्थ का समान रीतियों में प्रयोग करता है। याकूब अध्याय 1 पद 17 परमेश्वर की प्रकृति के अपरिवर्तनीय गुण के बारे में इस प्रकार बताता है:

> ...ज्योतियों का पिता...जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है। (याकूब 1:17)

पिता की प्रकृति उन कार्यों को करने की उसकी क्षमता को सीमित नहीं करती है जो उसकी प्रकृति के अनुरूप हैं। परन्तु यह निश्चित है कि वह अपनी सर्वोच्च सामर्थ का प्रयोग केवल उन्हीं रीतियों में करेगा जो उसके गुणों के अनुकूल हैं। उदाहरण के लिए, वह सर्वदा अनन्त रहेगा। वह पुत्र और पवित्र आत्मा के ऊपर अपने अधिकार को कभी नहीं छोड़ेगा। वह कभी कोई पाप नहीं करेगा। और वह सर्वदा अपने वायदों को पूरा करेगा।

> यह मेरे लिए बहुत रुचिकर है कि आधुनिक विज्ञान की उन्नति में एक तत्व इस बात की पहचान करना था कि परमेश्वर आज उसी प्रकार कार्य करता है जैसे वह कल करता था। जबकि जहाँ कहीं इस संसार में आत्मा पूजा व्याप्त है - यह विश्वास कि बहुत सारे देवता हैं और देवता इस संसार के पदार्थों में वास करते हैं - उनका मानना है कि परमेश्वर के बारे में कोई भविष्यद्वाणी नहीं की जा सकती - और यदि यह सत्य है, तो आप इस संसार का अध्ययन नहीं कर सकते क्योंकि आप नहीं जानते कि जिस प्रकार यह आज कार्य कर रहा है उसी प्रकार कल करेगा या नहीं। परन्तु यदि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है तो आप वास्तव में बाहर जा कर संसार का अध्ययन कर सकते हैं और समझ सकते हैं कि परमेश्वर ने इसे कैसे बनाया और यह कैसे कार्य करता है। और परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता के विश्वास ने ही आधुनिक विज्ञान की उन्नति को संभव बनाया। जैसे इसने आधुनिक विज्ञान की उन्नति को संभव बनाया उसी प्रकार यह अनिश्चित परिस्थितियों में एक मसीही को भरोसा, सांत्वना और शान्ति देता है क्योंकि हमारे लिए इन सबको समझना जरूरी नहीं है। हमारे लिए यह जानना जरूरी नहीं है कि क्या हो रहा है। हमें केवल यह जानना है कि हमारा परमेश्वर किसी भी और हर चुनौती पर पार पाने के लिए पूर्णत पर्याप्त है जिसका हम सामना करते हैं, और वह उस परिस्थिति को उसी प्रकार संबोधित करेगा जिस प्रकार उस ने दाऊद, इब्राहीम और आदम और यीशु और पौलुस से वायदा किया - कि वह भरोसेमन्द है, वह विश्वासयोग्य है, वह चंचल नहीं है, वह हर दिन बदलता नहीं है, और उसके पास हमारी प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने की सामर्थ है।
>
> डॉ. जे. लिगोन डन्कन तृतीय

अब पिता की सामर्थ की असीम प्रकृति पर चर्चा करने के बाद, हमें उसके अतुल्य गुणों की ओर मुड़ना चाहिए, यह ध्यान रखते हुए कि केवल परमेश्वर ही सर्वसामर्थी है।

अतुल्य

देखें यशायाह अध्याय 14 पद 24 से 27 में परमेश्वर की अतुल्य सामर्थ का वर्णन किस प्रकार किया गया है:

> सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, निस्सन्देह जैसा मैं ने ठाना है वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी, कि मैं अश्शूर को अपने ही देश में तोड़ दूँगा, और अपने पहाड़ों पर उसे कुचल डालूँगा; तब उसका जूआ उनकी गर्दनों पर से और उसका बोझ उनके कंधों पर से उतर जाएगा। यही युक्ति सारी पृथ्वी के लिए ठहराई गई है; और यह वही हाथ है जो सब जातियों पर बढ़ा हुआ है। क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है? (यशायाह 14:24-27)

ध्यान दें कि इस पद्यांश में, यहोवा की असीम सामर्थ के वर्णन के बाद यह पुष्टि है कि केवल वही सर्वसामर्थी है। ऐसा कोई नहीं जो उसे रोक सके, या उसके बढ़े हुए हाथ को मोड़ सके।

परमेश्वर की सामर्थ के अतुल्य होने का तथ्य स्वाभाविक रूप से इस तथ्य से बहता है कि सच्चा परमेश्वर केवल एक ही है। निश्चित रूप से, यदि अनन्त सामर्थ वाला कोई दूसरा अस्तित्व होता, तो एकमात्र परमेश्वर होने के परमेश्वर के स्थान को चुनौती दी जा सकती थी। आखिर, अनन्त सामर्थ वाला अस्तित्व या तो दिव्य होता, या अपनी सामर्थ के द्वारा अपने आपको दिव्य बना सकता था।

अय्यूब अध्याय 38 में परमेश्वर ने अय्यूब से यही कहा, जब उसने कहा कि अय्यूब अपने आप को धर्मी ठहरा सकता है यदि वह उन सामर्थी कार्यों को कर सके जिसे परमेश्वर ने किया है जैसे सृष्टि की रचना, क्रम ठहराना और पूरे ब्रह्माण्ड पर नियन्त्रण करना।

परन्तु वास्तविकता यह है कि केवल परमेश्वर ही वास्तव में दिव्य है। और इसलिए केवल परमेश्वर के पास असीम सामर्थ है।

दुःखद रूप से, हमारे समय में बहुत से समझदार मसीही इस बात से इनकार करते हैं कि परमेश्वर सर्वसामर्थी है। उन्होंने यह गलत रूप में समझ लिया है कि पवित्र वचन सिखाता है कि स्वयं परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ जो कुछ वह कर सकता है कर रहा है। परन्तु परमेश्वर की सर्वसामर्थ पवित्र वचन की एक अद्भुत व्यवहारिक शिक्षा है। जब परमेश्वर के लोग समस्या में होते हैं, वे परमेश्वर की सहायता की दोहाई देते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि वह बचा सकता है। जब ऐसा प्रतीत होता है कि बुराई संसार पर नियन्त्रण कर रही है, तो हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि परमेश्वर का बुराई पर पूर्ण नियन्त्रण है। परमेश्वर की सर्वसामर्थ में विश्वास के बिना, हमारे भरोसे का कोई आधार नहीं है कि परमेश्वर अपने शत्रुओं को हरा देगा, और उसके बच्चे उसके द्वारा प्रतिज्ञा की गई अनन्त आशीषों को प्राप्त करेंगे।

उस सारे धनी धर्मविज्ञान के बारे में सोचना अद्भुत है जो सर्वसामर्थी पिता शब्द में लिपटा है। हम एक सामर्थी, व्यक्तिगत, पितृमय परमेश्वर की सेवा करते हैं जो हम से प्रेम करता है और आश्चर्यजनक रीतियों से हमें संभालता है। और हम पूर्णत: सुनिश्चित हो सकते हैं कि उसकी सुरक्षा कभी असफल नहीं होगी क्योंकि हम जानते हैं कि वह स्वयं कभी असफल नहीं होगा। वह सर्वदा हमारा सृष्टिकर्ता, राजा और मुखिया रहेगा। उसकी सामर्थ हमेशा असीम, अतुल्य रहेगी। और वह कभी नहीं बदलेगा। वह सर्वदा हमें बचाने के लिए उपलब्ध रहेगा, और उसके द्वारा दिया जाने वाला उद्धार उसके समान ही अनन्त है।

इस अध्याय में अब तक हमने हमारे त्रिएक परमेश्वर की प्रकृति, और सर्वसामर्थी पिता के नाम से ज्ञात दिव्य व्यक्ति की विशेषताओं को देखा। इस बिन्दु पर, हम अपने तीसरे शीर्षक पर आने के लिए तैयार हैं: आकाश और पृथ्वी के कर्ता के रूप में पिता की भूमिका।

कर्ता

आकाश और पृथ्वी के कर्ता के रूप पिता के बारे में हमारी चर्चा उसके रचनात्मक कार्य के तीन पहलूओं पर केन्द्रित होगी। पहला, हम पिता के सृष्टि के कार्य को देखेंगे। दूसरा, हम सृष्टि की भलाई पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। तीसरा, हम सृष्टि पर पिता के अधिकार का वर्णन करेंगे। आइए अब पिता द्वारा किए गए सृष्टि के कार्य को देखने के साथ शुरू करें।

सृष्टि का कार्य

इसके विश्वास का पहला सूत्र कहता है:

> मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ,
> जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

पवित्र वचन में पिता के बताए गए सारे कार्यों में, यही एक कार्य है जिस पर ऐतिहासिक मसीहियत ने बल दिया है और सारे मसीही जिसकी पुष्टि करते हैं।

अधिकाँश मसीही इस विचार से परिचित हैं कि परमेश्वर ब्रह्माण्ड को बनाया और उसे स्थिर रखता है, क्योंकि पवित्र वचन में अक्सर इसके बारे में बताया गया है। वास्तव में, यदि हम अपनी बाइबल का पहला पृष्ठ खोलें और पढ़ना शुरू करें, पहली बात जो हमें बताई जाती है वह यह कि परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का कर्ता है। जैसा हम उत्पत्ति अध्याय 1 पद 1 में सीखते हैं:

> आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)

इस परिचयात्मक पद के बाद, उत्पत्ति अध्याय 1 का शेष भाग बताता है कि परमेश्वर ने छह दिन में ब्रह्माण्ड को बनाया और स्थिर किया।

अब, कलीसिया के इतिहास के दौरान, उत्पत्ति अध्याय 1 के सृष्टि के अभिलेख की व्याख्या के बारे में बहुत सी अवधारणाएँ रही हैं। लगभग सभी धर्मविज्ञानी इस से सहमत हैं कि परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड को शून्य में से बनाया। यानी, परमेश्वर द्वारा आकाश और पृथ्वी की सृष्टि से पहले, स्वयं परमेश्वर के अलावा और कुछ नहीं था। ऐसा कोई तत्व पहले से मौजूद नहीं था जिससे परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड की सृष्टि की। और कई लोग सुझाव देते हैं कि परमेश्वर ने समय और अन्तरिक्ष को भी बनाया।

परन्तु धर्मविज्ञानियों में अक्सर उस विधि के बारे में असहमति रही है जिसके द्वारा परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड को बनाया, विशेषत: सृष्टि के छह दिनों की प्रकृति के बारे में। कई कलीसियाई अगुवे, जैसे क्लेमेन्ट, ओरिगन और अगस्टीन, मानते थे कि दिन सृष्टि के रूपकात्मक प्रतिनिधित्व थे जिसमें संभवत: एक क्षण ही लगा था। दूसरे, जैसे आइरेनियस और तर्तुलियन, उन्हें सामान्य 24-घण्टों वाले दिनों के रूप में देखते थे। बाद में, जब विज्ञान ने कहना शुरू किया कि ब्रह्माण्ड बहुत पुराना है, तो बहुत से धर्मविज्ञानी सृष्टि के अभिलेख को नये तरीकों से पढ़ने लगे। कुछ ने सुझाव दिया कि दिन तो सामान्य 24-घण्टों की अवधि के थे, परन्तु परमेश्वर द्वारा सृष्टि करने के इन दिनों के बीच अन्तराल बहुत बड़ा था। दूसरों ने दिनों की व्याख्या रूपकों के रूप में की जो युगों या कालों को बताते हैं।

> निश्चित रूप से उत्पत्ति अध्याय 1 में सृष्टि के दिनों का मामला बहुत गरम है जो बहुत सारे वाद-विवादों का स्रोत रहा है। मैं सोचता हूँ एक मामला यह है: यह किस प्रकार का साहित्य है? क्या यह इस प्रकार का साहित्य है जो हमें इन्द्रियों से संबंधित तथ्यों को देने के लिए बनाया गया है, यह साहित्य हमें आत्मिक सत्य

> सिखाने के लिए बनाया गया है। अब, हमें इन दोनों के बीच दरार को बड़ा नहीं करना चाहिए। परमेश्वर इस संसार का सृष्टिकर्ता है और ये दोनों एक-दूसरे के अनुरूप होने चाहिए। परन्तु यदि हम उत्पत्ति अध्याय 1 को विज्ञान के लेख के रूप में पढ़ें तो यह हमें इसे सृष्टि की प्रकृति और अर्थ की चर्चा के रूप इसे पढ़ने की बजाय एक अलग व्याख्या की ओर ले जाएगा। (डॉ. जॉन ओस्वाल्ट)

आरम्भिक कलीसिया और उनके द्वारा प्रेरितों के विश्वास-वचन के प्रयोग में, जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है वह यह कि विश्वासी अंगीकार करते थे कि केवल परमेश्वर ने, पिता के व्यक्तित्व की अगुवाई में, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बनाया और वही सारे आत्मिक और भौतिक क्षेत्रों सहित, उनके सारे तत्वों और प्राणियों के साथ उसे स्थिर रखता है।

यही वह विचार है जिस पर नहेमयाह अध्याय 9 पद 6 में लेवियों ने बल दिया। उनके शब्दों को सुनें:

> तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन सब से ऊँचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उस में है, सभों को तू ही ने बनाया, और सभों की रक्षा तू ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत करती है। (नहेमयाह 9:6)

जैसे हम यहाँ पढ़ते हैं, केवल परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड को बनाया। और केवल परमेश्वर ही सब कुछ जो विद्यमान है उसे जीवन देता है और अपने बनाए हुए ब्रह्माण्ड को स्थिर रखता है।

अब, यह बताना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि आकाश और पृथ्वी को बनाने और स्थिर करने में पिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इन कार्यों में सम्पूर्ण त्रिएकता विभिन्न रीतियों से शामिल है। उदाहरण के लिए, पुत्र वह माध्यम या उपकरण था जिसे पिता ने संसार को बनाने के लिए प्रयोग किया, और वह अब भी इसे स्थिर रखने के लिए उसका प्रयोग करता है।

देखें कि पौलुस 1 कुरिन्थियों अध्याय 8 पद 6 में सृष्टि के कार्य का वर्णन कैसे करता है:

> तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिस की ओर से सब वस्तुएँ हैं, और हम उसी के लिए हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएँ हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं। (1 कुरिन्थियों 8:6)

यहाँ, पौलुस ने बताया कि पिता सृष्टि का स्रोत है। सृष्टि उस से है। परन्तु यह पुत्र के द्वारा है। हम इसलिए जीवित हैं क्योंकि पिता पुत्र के द्वारा हमारे जीवनों को स्थिर रखता है।

पवित्र वचन में पवित्र आत्मा की भागीदारी का स्पष्ट वर्णन नहीं है। प्राथमिक रूप से पुराने नियम के पद्यांश परमेश्वर के आत्मा के कार्य का संकेत देते हैं। पुराने नियम के समयों के दौरान, पवित्र आत्मा परमेश्वर के अलग व्यक्तित्व के रूप में स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं हुआ था। लेकिन, नया नियम सिखाता है कि वह संसार में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए पहले से ही सक्रिय था। हम इसे मरकुस अध्याय 12 पद 36 जैसे पद्यांशों में देखते हैं जो बताते हैं कि पवित्र आत्मा ने पुराने नियम के लेखकों को प्रेरणा दी, और प्रेरितों के काम अध्याय 2 पद 2 से 17 में, जहाँ पतरस ने सिखाया कि पुराने नियम के समय में भी भविष्यद्वाणी और आत्मिक वरदानों का देने वाला पवित्र आत्मा था।

अत:, जब हम परमेश्वर के आत्मा के पुराने नियम के अभिलेखों को पढ़ते हैं, तो यह मानना तार्किक है कि वे बाद में दिव्य व्यक्ति के रूप में पवित्र आत्मा के स्पष्ट प्रकाशन की छाया हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति अध्याय 1 पद 2 और 3 में हम पढ़ते हैं:

> और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था। तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया। (उत्पत्ति 1:2-3)

"परमेश्वर का आत्मा" शब्द शाब्दिक रूप में परमेश्वर के सारे व्यक्तित्वों को बताता है। परन्तु हमारे नये नियम के दृष्टिकोण से, हम उन में पवित्र आत्मा के कार्यों पर बल को देख सकते हैं।

सृष्टि के कार्य में कर्ता के रूप में पिता की भूमिका को देखने के बाद, हम पिता द्वारा बनाई गई सृष्टि की अच्छाई को देखने के लिए तैयार हैं।

सृष्टि की अच्छाई

बहुत से धर्म और दर्शनशास्त्र सिखाते हैं कि भौतिक ब्रह्माण्ड न अच्छा है और न बुरा। दूसरे वास्तव में कहते हैं कि संसार बुरा है। उदाहरण के लिए, बहुत से अन्यजाति दर्शनशास्त्र जिनका आरम्भिक कलीसिया ने सामना किया, सिखाते थे कि भौतिक ब्रह्माण्ड भ्रष्ट था, और वास्तव में छुटकारा पाने के लिए मनुष्यों को अपने शरीरों के बन्धन से छूटना होगा। संसार के बारे में यह नकारात्मक विचार एक कारण था जिस के कारण प्रेरितों के विश्वास-वचन ने इस बात पर बल दिया कि परमेश्वर आकाश और पृथ्वी को बनाया। बाइबल में, ब्रह्माण्ड परमेश्वर की अच्छी सृष्टि है जो उसके अच्छे चरित्र को प्रतिबिम्बित करता है।

उत्पत्ति अध्याय 1 में, हमें पद 4, 10, 12, 18, 21, 25, और 31 में पूरे सात बार सृष्टि की अच्छाई को याद दिलाया जाता है। और इन में से अन्तिम में, पवित्र वचन कहता है कि सारी सृष्टि केवल "अच्छी" ही नहीं बल्कि "बहुत अच्छी" है। जैसे मूसा ने उत्पत्ति अध्याय 1 पद 31 में लिखा:

> तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। (उत्पत्ति 1:31)

दुखद रूप से, परमेश्वर द्वारा संसार की सृष्टि के बाद, आदम और हव्वा ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने के द्वारा परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया। और मनुष्य के पाप के परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने पूरी सृष्टि को स्राप दिया। उत्पत्ति अध्याय 3 पद 17 से 19 इसके बारे में बताता है, जहाँ परमेश्वर ने आदम से कहा:

> भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा: और वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा। और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा। (उत्पत्ति 3:17-19)

आदम के पाप के कारण, परमेश्वर ने भूमि को शाप दिया और खेती करना मुश्किल हो गया, और आदम और शेष मनुष्यों को अपने भोजन के लिए कठिन मेहनत करनी पड़ी। और भूमि का यह शाप खेती तक ही सीमित नहीं था। इसने सम्पूर्ण संसार के सारे पहलूओं को प्रभावित किया। पौलुस ने रोमियों अध्याय 8 में इस समस्या के बारे में लिखा जब उसने कहा कि यीशु मसीह के द्वारा विश्वासियों के छुटकारे के बाद स्वयं सृष्टि की पुन: स्थापना होगी। सुनें पौलुस रोमियों अध्याय 8 पद 20 से 22 में क्या कहता है:

> क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई कि सृष्टि आप विनाश के दासत्व से छुटकारा पाए... क्योंकि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। (रोमियों 8: 20-22)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पौलुस ने सिखाया कि भूमि के शाप ने सृष्टि के प्रत्येक तत्व पर प्रभाव डाला।

परन्तु परमेश्वर के शाप के बावजूद, हमें यह सोचने की गलती नहीं करनी चाहिए कि अब सृष्टि अच्छी नहीं है। हाँ, मनुष्य के पाप में गिरने से सृष्टि में बिगाड़ हुआ। परन्तु यह अब भी परमेश्वर का संसार है, और यह अब भी मूलभूत रूप से अच्छा है। पौलुस विवाह की मान्यता और मसीहियों द्वारा हर प्रकार का भोजन करने की आजादी के बारे में लिखते समय इसे बताता है। 1 तीमुथियुस अध्याय 4 पद 4 में उसके वचनों को सुनें:

> परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है। (1 तीमुथियुस 4:4)

ध्यान दें पौलुस यहाँ क्या कहता है। उसने यह नहीं कहा कि सृजी हुई हर वस्तु अच्छी "थी," बल्कि यह कि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी "है।"

> यह तथ्य कि भौतिक संसार अच्छा है-परमेश्वर ने इसे अच्छा कहा-इसके हमारे लिए कई व्यवहारिक अर्थ हैं। एक बात, हमें वातावरण की रक्षा करनी है। हम इस सृष्टि के भण्डारी हैं। और दूसरी बात, अन्त में परमेश्वर इस सृष्टि को संभालेगा। वह इसे पुनः बनाएगा; सृष्टि के विनाश की बजाय सृष्टि की पुनः स्थापना होगी। हम सदा के लिए एक नये आकाश और नई पृथ्वी पर रहेंगे। परमेश्वर द्वारा सृजा गया भौतिक संसार अच्छा है। हमारे भौतिक शरीर - हमारी भौतिक उपस्थिति - एक अच्छी बात है। (डॉ. मार्क स्ट्रोस)

अत:, चाहे हम विवाह या भोजन या परमेश्वर द्वारा सृजी हुई किसी भी वस्तु के बारे में बात करें, हम इस बात के प्रति निश्चित हो सकते हैं कि यह अच्छी है क्योंकि इसे बनाने वाला पिता अच्छा है। इसीलिए रोमियों अध्याय 1 में पौलुस ने भी कहा परमेश्वर की भलाई उसके द्वारा सृजी हुई वस्तुओं के द्वारा सारे मनुष्यों पर प्रकट है। इसीलिए भजन 19 दावा करता है कि आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन करता है।

जाँन वेस्ली ने अठारहवीं सदी की अपनी पुस्तक, सृष्टि में परमेश्वर की बुद्धि का एक सर्वेक्षण, भाग 3, अध्याय 2, में सृष्टि की अच्छाई का वर्णन किया। देखें कि उसने वहाँ क्या लिखा:

> सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक तस्वीर है, जिसमें परमेश्वर की सिद्धता दिखती है। यह न केवल उसके अस्तित्व को, बल्कि उसकी एकता, उसकी सामर्थ, उसकी बुद्धि, उसकी आत्मनिर्भरता, उसकी अच्छाई को भी दिखता है।

ब्रह्माण्ड अपने में निहित अच्छाई के द्वारा परमेश्वर की अच्छाई का प्रदर्शन करता है - वह अच्छाई जो इस में है क्योंकि इसे एक अच्छे परमेश्वर ने सृजा है।

> परमेश्वर की सृष्टि उसकी अच्छाई को प्रतिबिम्बित करती है। यह हमें बताती है कि सृष्टि अपने आप में बुरी नहीं है, पदार्थ में बुराई निहित नहीं है। परन्तु यह हमें यह भी बताती है कि जब परमेश्वर ने संसार को बनाया तो उसे बहुत अच्छा बनाया। सृष्टि में खूबसूरती है। अब पाप के कारण वह खूबसूरती दूषित हो गई है। काँटों और ऊँटकटारों तथा माथे के पसीने ने परमेश्वर की सृष्टि को बिगाड़ दिया है, परन्तु मसीहियों के रूप में हमने एक प्रक्रिया शुरू की है, या परमेश्वर ने हमें पुनः रचने की प्रक्रिया हमारे अन्दर शुरू की है। हम यीशु मसीह में एक नई सृष्टि हैं और जैसे गीतकार कहता है, मसीहियों के रूप में, हम कुछ ऐसा देखते हैं जिसे मसीह रहित आँखों ने कभी नहीं देखा। हम सृष्टि को परमेश्वर के हाथों के कार्य के रूप में देखने

> लगते हैं। इसलिए मसीहियों के रूप में हम सृष्टि में कला, ख़ूबसूरती, संगठन, निरन्तरता, और जुड़ाव को देखते हैं। और नये आकाश और नई पृथ्वी में हमारी यही अपेक्षा है, जब परमेश्वर की सृष्टि को पूरी तरह नया किया जाएगा और हम सृष्टि का उस तरह से आनन्द उठा पायेंगे जिस प्रकार परमेश्वर ने इसकी इच्छा की थी।
>
> डॉ. डेरेक डब्ल्यू. एच. थॉमस

सृष्टि के कार्य और सृष्टि की अच्छाई की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हम सृष्टिकर्ता के रूप में सृष्टि के ऊपर पिता के अधिकार को देखने के लिए तैयार हैं।

सृष्टि पर अधिकार

सृष्टिकर्ता के रूप में पिता के अधिकार के बारे में हम बहुत कुछ कह सकते हैं। परन्तु हम इसकी केवल तीन मूलभूत विशेषताओं पर ध्यान देंगे: उसका अधिकार अन्तिम, एकमात्र और पूर्ण है। सृष्टिकर्ता के रूप में पिता के अधिकार की अन्तिम प्रकृति के साथ शुरू करते हुए हम इनमें से प्रत्येक पर ध्यान देंगे।

अन्तिम

पिता का अधिकार इस अर्थ में अन्तिम है कि उसके पास अपनी सृष्टि के साथ वह जो चाहता है उसे करने की पूरी आजादी है। पवित्र वचन अक्सर उसके अन्तिम अधिकार की तुलना अपनी मिट्टी पर कुम्हार के अधिकार से करता है। हम यशायाह अध्याय 29 पद 16, यशायाह अध्याय 45 पद 9, यिर्मयाह अध्याय 18 पद 1 से 10, और रोमियों अध्याय 9 पद 18 से 24 जैसे स्थानों में इसका वर्णन पाते हैं। देखें पौलुस रोमियों अध्याय 9 पद 20 और 21 में परमेश्वर के अधिकार के बारे में क्या कहता है:

> क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है कि तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है? क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं, कि एक ही लोंदे में से, एक बरतन आदर के लिए, और दूसरे को अनादर के लिए बनाए? (रोमियों 9:20-21)

निस्संदेह, पौलुस के सवालों के उत्तर स्पष्ट हैं। चूँकि परमेश्वर सब का सृष्टिकर्ता है, इसलिए उसे अपनी सृष्टि के साथ जो वह चाहता है उसे करने की आजादी और अधिकार है।

> मेरा सोचना है कि कुछ लोग जब यह सुनते हैं कि बाइबल यह सिखाती है कि संसार में जो कुछ होता है उस पर अन्तिम अधिकार परमेश्वर का है, तो शायद उन्हें इससे डर लगता है; वे क्रोधित हो जाते हैं। परन्तु मसीहियों को, वास्तव में जब हम सोचते हैं कि परमेश्वर कौन है, तो हमें अत्यधिक कृतज्ञ होना चाहिए। इसका मतलब है कि हमारे जीवन सबसे बुद्धिमान, सबसे सामर्थी, और सबसे प्रेमी पिता के हाथों में हैं, जिसने अपने खुद के बेटे को क्रूस पर हमारे लिए दे दिया। और मुसीबतों के समय में, जब हम सोचते हैं कि हमारे जीवनों में क्या हो रहा है तब यह हमें अत्यधिक सांत्वना प्रदान करता है।
>
> डॉ. डेनिस जॉनसन

> चाहे हम उन सारी बातों को न समझें जो हो रही हैं, यदि आप यीशु मसीह के हैं, तो परमेश्वर आपका पिता है और वह आपसे प्रेम करता है। और आप चाहे किसी भी परिस्थिति से होकर जायें वह आपकी सुरक्षा करता है और आप पर नजर रखता है। इस संसार में हम कई बार अत्यधिक दर्द सहते हैं। परन्तु आप चाहे किसी भी परिस्थिति से होकर गूजरें सब कुछ उसके नियन्त्रण में है। क्या आप अपने जीवन के इस बिन्दु पर इसे स्वीकार कर सकते हैं-उसने इसे आपकी भलाई के लिए आपके शुद्धिकरण के लिए नियुक्त किया है। परमेश्वर हमारे जीवन में हमारे शत्रुओं को बदल देता है, वह उन्हें हमारे मित्र बना देता है इसलिए हम उसके द्वारा जयवन्त से भी बढ़कर हैं जिसने हम से प्रेम किया। हम केवल जय नहीं पाते हैं; लिखा है कि हम उसके द्वारा जयवन्त से भी बढ़कर हैं जिसने हम से प्रेम किया। अत:, परमेश्वर परीक्षाओं और मुसीबतों के द्वारा हमें पवित्र करता है, हमें मसीह के समान बनाता है। इब्रानियों अध्याय 12: वह एक दयालु और बुद्धिमान पिता के समान हमारी ताड़ना करता है। मैं सोचता हूँ कि विश्वास की लड़ाई अक्सर ठीक इसी बिन्दु पर लड़ी जाती है। हमें अपने आप से बार-बार यह कहना है परमेश्वर, परमेश्वर को हमारी चिन्ता है और चाहे मैं इसे न समझ पाऊँ वह इसे मेरे जीवन में मेरी भलाई के लिए, मेरी पवित्रता के लिए, मेरे शुद्धिकरण के लिए ला रहा है।
>
> डॉ. टॉम श्रेनर

एकमात्र

अन्तिम अधिकार होने के साथ-साथ, अपने द्वारा सृजी हुई हर वस्तु पर केवल पिता का अधिकार है। सृष्टिकर्ता के रूप में पिता का अधिकार इस अर्थ में विशिष्ट है कि और कोई प्राणी अन्तिम अधिकार नहीं रखता है। अन्तिम अधिकार केवल सृष्टिकर्ता का है, और केवल परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता है। और इससे आगे, जब हम आर्थिक रूप से त्रिएकता को देखते हैं, पिता का त्रिएकता के अन्य व्यक्तियों पर भी अधिकार है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना अध्याय 5 पद 26 और 27 में यीशु के वचनों को सुनें:

> क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे। वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है। (यूहन्ना 5:26-27)

यीशु ने सिखाया कि संसार का न्याय करने का अधिकार उसे पिता के द्वारा दिया गया है। यह अधिकार अन्तिम रूप से पिता का था, और यह केवल उसी का विशेषाधिकार था। परन्तु पिता ने अपने स्थान पर न्याय करने के लिए पुत्र को नियुक्त किया। हम 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 पद 24 में भी इसी विचार को पाते हैं, जहाँ ब्रह्माण्ड के ऊपर यीशु का शासन पिता के उच्च शासन के अधीन है।

और पवित्र आत्मा के बारे में सच्चाई भी कुछ ऐसी ही है। यूहन्ना अध्याय 16 पद 13, रोमियों अध्याय 8 पद 11, और 1 पतरस अध्याय 1 पद 2 जैसे पद्यांश सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा भी पिता की इच्छा को पूरा करता है।

और जिस प्रकार पुत्र का अधिकार और आत्मा का अधिकार पिता द्वारा दिया गया है, उसी प्रकार सृष्टि को भी अधिकार दिया गया है। स्वर्गदूत, सांसारिक शासक, और औसत मनुष्यों को भी कुछ हद तक अधिकार प्राप्त है। परन्तु ये सब अधिकार परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं, इसलिए पिता का अधिकार सर्वदा सृष्टि के अधिकार से ऊपर है।

पूर्ण

अन्तिम और एकमात्र अधिकार होने के अतिरिक्त, पिता का ब्रह्माण्ड पर पूर्ण अधिकार भी है। जब हम कहते हैं कि परमेश्वर का अधिकार पूर्ण है, तो हमारा मतलब है यह उसके द्वारा बनाई गई हर वस्तु पर पूरी तरह से है। इस तथ्य के कम से कम दो महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। पहला, हर कोई परमेश्वर के अधिकार के अधीन है। कोई व्यक्ति या सृजी हुई वस्तु परमेश्वर की आज्ञा मानने की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं है।

स्वर्गदूत और पिता के प्रति विश्वासयोग्य मनुष्य इसे पहचानते हैं और अपनी इच्छा से उसके अधीन रहते हैं। परन्तु दुष्ट आत्माएँ और अविश्वासयोग्य मनुष्य उसके विरूद्ध बलवा करते हैं और उसकी आज्ञाओं के अधीन होने से इनकार करते हैं। फिर भी, पिता का नैतिक न्याय हर किसी पर लागू होता है। हम चाहे कहीं भी रहें या कोई भी हों, और चाहे हमारी संस्कृति या धर्म कुछ भी हो, हम सब परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार हैं।

दूसरा, सब कुछ परमेश्वर के अधिकार के अधीन है। उसका अधिकार प्रत्येक विवरण तक है जिसे उसने बनाया है। चूँकि परमेश्वर ने सारी वस्तुओं को बनाया है, इसलिए सृष्टि का कोई पहलू नैतिक रूप से तटस्थ नहीं है। उस ने सब कुछ एक उद्देश्य के लिए बनाया है, और उसे एक नैतिक चरित्र दिया है। और इसका मतलब है कि विषय चाहे जो भी हो, चाहे सृष्टि के किसी भी पहलू की बात हो, कोई नैतिक तटस्थता नहीं है। सृष्टि में हर वस्तु या तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करती है, और इसलिए अच्छी है, या उसके विरूद्ध बलवा करती है, और इसलिए बुरी है।

आधुनिक संसार में बहुत से मसीहियों में जीवन को पवित्र वस्तुओं और सांसारिक वस्तुओं में बाँटने की प्रवृत्ति है। हम में से अधिकाँश लोग मानते हैं कि “पवित्र” बातें जैसे कलीसिया, आराधना, सुसमाचार प्रचार, और बाइबल अध्ययन इत्यादि परमेश्वर के अधिकार के अधीन हैं। हम अपने परिवारों और नैतिक निर्णयों को भी पवित्र मानते हुए परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की कोशिश करते हैं। परन्तु बहुत से मसीही सोचते हैं कि परमेश्वर की आज्ञाओं का राजनीति, शिक्षा, और काम जैसे “सांसारिक” कहलाने वाले विषयों पर शासन नहीं है। परन्तु पवित्र दुनिया और सांसारिक दुनिया का यह आधुनिक विभाजन बाइबल के अनुरूप नहीं है। नीतिवचन अध्याय 3 पद 6, सभोपदेशक अध्याय 12 पद 14, और 2 तीमुथियुस अध्याय 3 पद 16 और 17 जैसे पद्यांश संकेत देते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र के बारे में बात की है और उसका अधिकार हम जो कुछ करते हैं उन सब पर है।

> एक ऐसे संसार में जहाँ अधिकार को अक्सर केवल नकारात्मक अर्थ में लिया जाता है, परमेश्वर का अधिकार एक महान बात है जिस पर मसीही विश्वास करते हैं क्योंकि परमेश्वर अब भी इस संसार से प्रेम करता है, सब कुछ उसके नियन्त्रण में है, परमेश्वर अन्त को शुरूआत से जानता है, परमेश्वर सब लोगों का न्याय करेगा। और इस से हमें अच्छा महसूस होना चाहिए क्योंकि हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि कोई है जो जानता है वह क्या कर रहा है और भविष्य के लिए यही हमारा विश्वास और भरोसा है।
>
> डॉ. साइमन वाइबर्ट

उपसंहार

पिता परमेश्वर पर इस अध्याय में, हमने प्रेरितों के विश्वास-वचन में विश्वास के पहले सूत्र को निकटता से देखा। हमने परमेश्वर की धारणा पर विचार किया जो इस सूत्र में निहित है। हमने परमेश्वरत्व के प्रथम व्यक्ति के रूप सर्वसामर्थी पिता की बात की। और हमने आकाश और पृथ्वी के कर्ता के रूप में पिता की भूमिका को देखा।

सारे मसीही धर्मविज्ञान के लिए पिता परमेश्वर के व्यक्तित्व को समझना महत्वपूर्ण है। जब तक हम पवित्र वचन के सच्चे त्रिएक परमेश्वर को न जानें और उसकी आराधना न करें, तो हम एक झूठे परमेश्वर की आराधना करते हैं। और उस व्यक्ति को पहचानना और आदर देना, जिसे पवित्र वचन पिता कहता है, सच्ची आराधना का निर्णायक हिस्सा है। पुत्र और पवित्र आत्मा पिता की आज्ञा मानते हैं और उसका आदर करते हैं - उसकी महिमा को बढ़ाने के लिए कार्य करते हैं। और इसलिए हमारे आज्ञापालन, आदर, और महिमा का केन्द्र केवल वही होना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।